

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अक्टूबर 2024

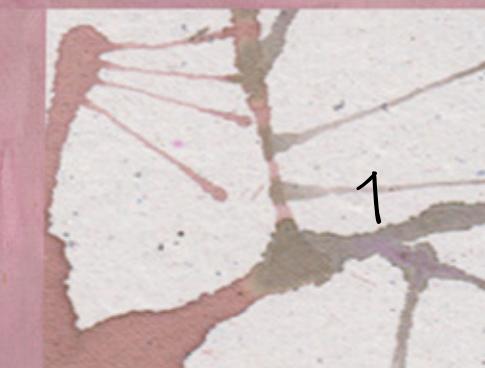
अंक 457 ● अक्टूबर 2024

चंकमाक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50



1

तुम तो जानते ही हो कि चक्मक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। पिछली बार की ही तरह विशेषांक के साथ-साथ यह नवम्बर और दिसम्बर माह का संयुक्त अंक भी होगा। मतलब इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के लिए बहुत सारे पने होंगे। तो इस अंक के लिए खास तौर से अपनी रचनाएँ हमें भेजना।

इस विशेषांक के लिए किस्से-कहानियों-कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे:

- पेज नम्बर 6 पर दी गई कहानी पूरी करो। तुम दी गई कहानी के पहले या बाद का हिस्सा लिख सकते हो।
- अपने घर-परिवार या आसपास के बड़े-बुजुर्गों से पता करके अपने इलाके के इतिहास के बारे में लिखो।
- किसी ऐसे भोजन/पकवान की रेसिपी (फोटो सहित) जो बाजार में रेस्ट्रां/होटल में नहीं मिलते।
- अपने आसपास आसानी से मिलने वाली चीज़ों जैसे रसोई में इस्तेमाल होने वाली चीज़ों, कबाड़ की चीज़ों, घास-पत्तियों, डण्डियों-फूलों, कपड़ों की कतरनों आदि से बनाई जा सकने वाली चीज़ों को बनाने की विधि।
- खेल से जुड़ा कोई भी किस्सा।
- हाल ही में सुना कोई ऐसा समाचार जो तुम्हें बहुत ज़रूरी लगता है और उसे सुनकर तुम्हें कैसा महसूस हुआ।

इनके अलावा अपनी खुद की रची कहानी, कविताएँ, किस्से, लेख, चित्र, चुटकुले, पेटिंग, कॉमिक और क्यों-क्यों के जवाब के साथ-साथ तुम चक्मक के अन्य कॉलम जैसे माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, अन्तर ढूँढो, तुम भी जानो, पुस्तक समीक्षा, फिल्म चर्चा और भूलभुलैया के लिए भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हो।

रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है - 10 अक्टूबर।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना

पूरा पता ज़रूर लिखना।

रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हॉट्सऐप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।



इस बार

मेरामान जो कभी गर ही नहीं - भाग 6	4
- आर एस देशू राज, ए पी माधवन व साथी कहानी पूरी करो	6
भूलभुलैया	7
हाशिर में गाँधी	
- शशि सबलोक	8
एक विद्रोह ऐसा भी... - एक कामकथा में...	
- सी. एन. सुब्रह्मण्यम्	12
मेरी दुनिया के...	
- अद्वान अफ़िल दर्शन	14
तीसरी आँख	
- वसुन्धरा बहुगुणा	16
इस कहानी का विलेन कौन?	
- इश्तेयाक अहमद	20
क्यों-क्यों	24
माथापच्ची	28
तुम भी बनाओ - बोर्ड गेम	
- प्रभाकर डबराल	32
चित्रपहेली	34
मेरा पत्ना	36
तुम भी जानो	43
डॉल्फिन अभ्यारण्य	
- शोहन चक्रवर्ती	44
आवरण चित्रः कनक शशि	



सम्पादक	डिजाइन
विनता विश्वनाथन	कनक शशि
सह सम्पादक	सलाहकार
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक
सुशील जोशी	वितरण
उमा सुधीर	झनक राम साहू

चक्मक

खादी व्यापोद्योषा भंडार



एक प्रति : ₹ 50
सदस्यता शुल्क (रजिस्टर्ड डाक चाहिए)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250
एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmак@eklavya.in, वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmак-magazine

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीआँडर/बैंक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmак@eklavya.in,
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmак-magazine>

3

भाग - 6

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे
हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

सुबबूल

वैज्ञानिक नाम: ल्यूकेना ल्यूकोसेफला
(*Leucaena leucocephala*)

मूल: मध्य अमेरिका

कैसे पहुँचा: तेज़ी-से उगने वाला ये पेड़ निप्तीकृत मिट्टी (degraded soil) में उग सकता है और शुष्क परिस्थितियों को सह सकता है। यह चारे और ईंधन की लकड़ी का अच्छा स्रोत है। इसलिए 1960 के दशक से इसे 'चमत्कारी पेड़' कहकर दुनिया भर में बढ़ावा दिया गया। कृषिवानिकी में इसे नाइट्रोजन स्थिर (Nitrogen Fixation) करने वाले पेड़ के रूप में पेश किया गया। इस बात के कुछ सबूत हैं कि भारत में इसे 1800 के दशक के अन्त में लाया गया होगा।



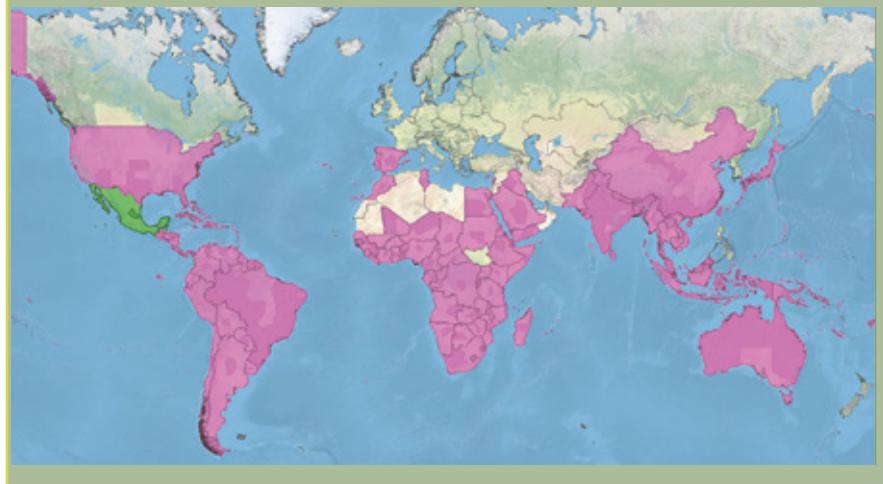
आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्बेकर

सुबबूल तेज़ी-से बढ़ने वाला एक बारहमासी झाड़ या छोटा पेड़ है। अमूमन इसकी ऊँचाई 3 से 15 मीटर तक होती है, लेकिन यह 20 मीटर की ऊँचाई तक भी बढ़ सकता है। इसकी छाल स्लेटी-कत्थई रंग की होती है जिसमें नारंगी-कत्थई रंग की कई खड़ी दरारें होती हैं। इसकी पत्तियाँ एकान्तर होती हैं और द्विपिच्छाकारी संयुक्त (bipinnately compound) होती हैं। इनके 4-9 जोड़ी पत्रक होते हैं जिन्हें पिच्छक (pinna) कहा जाता है। हर पिच्छक में नुकीले सिरों वाले अण्डाकार 13-21 जोड़ी छोटे पत्रक होते हैं। इसके सफेद फूल पाउडर पफ सरीखे होते हैं। फूलों के सिर गोलाकार और 2 सेंटीमीटर चौड़े होते हैं। फूलों के गुच्छे पत्ती के कक्ष से निकलते हैं और हर गुच्छे में 4-6 फूल होते हैं।

सुबबूल के फल गुच्छों में निकलते हैं जिनमें 20 तक फलियाँ होती हैं। लगभग 20 सेंटीमीटर लम्बी और 2 सेंटीमीटर चौड़ी ये फलियाँ लम्बी, चपटी और कागज़ जैसी होती हैं। नारंगी-कत्थई रंग की इन फलियों पर सफेद मखमली रुएँ हो सकते हैं। सूखने पर ये फलियाँ खुल जाती हैं। इनसे 10-25 बीज निकलते हैं। सुबबूल के बीज गुरुत्वाकर्षण और पानी के ज़रिए फैलते हैं। बाहरी छिलके के कड़क होने के कारण ये मिट्टी में लम्बे समय तक निष्क्रिय रह सकते हैं। और इस तरह बीजों का एक स्थायी बैंक बन जाता है।

काटने-छाँटने या जलाने के बाद भी सुबबूल आसानी-से दोबारा उग जाता है।



प्रवेश

स्वाभाविक

मूल जानकारी नहीं दर्ज

असर

सुबबूल की पत्तियाँ चारे के रूप में इस्तेमाल की जाती है, हालाँकि ज्यादा मात्रा में ये जहरीली हो सकती हैं। नाइट्रोजन स्थिर करने वाले पौधे के रूप में इसे प्रबन्धित कृषि वानिकी में एक सहायक फसल के रूप में उपयोगी माना जाता है। ये खुले और पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित क्षेत्रों में आक्रामक रूप से फैल जाते हैं। यह शुष्क मौसम से लेकर भारी वर्षा वाले स्थानों (600-3000 मिलीमीटर) और विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगते हैं। हालाँकि यह अम्लीय या जलभराव वाली मिट्टी में अच्छी तरह नहीं बढ़ पाते हैं और ठण्ड सहन नहीं कर पाते हैं।

सुबबूल का पौधा सड़क किनारे, पार्क, खुले जंगल और तटीय किनारों व नदी के किनारों पर व्यापक रूप से फैल जाता है। वहाँ यह घने, झुरमुट बना लेता है और स्थानीय प्रजातियों के पौधों को फिर से उगने से रोकता है।



बन्दोबस्त

छोटे पौधों को जड़ से उखाड़ना या खोदना इसके नियंत्रण का एक कारगर तरीका हो सकता है, लेकिन यह बड़े पेड़ों के लिए काम नहीं करता। क्योंकि जड़ या तने का कोई भी अंश दोबारा उग सकता है।

बड़े पेड़ों को काटकर उनके ढूँठ पर शाकनाशी लगाने का तरीका अमेरिका के हवाई प्रदेश में असरदार पाया गया है। भारत में सुबबूल के खरपतवार बनने की क्षमता को कम करने के लिए सौरीकरण (सौर ऊर्जा का इस्तेमाल करते हुए किसी चीज़ को गरम करना) के तरीके को उपयोग में लाया गया है। इसके लिए नम मिट्टी को प्लास्टिक की चादर से एक महीने के लिए ढँका जाता है। इससे मिट्टी का तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है और इससे मिट्टी में दबे बीज मर जाते हैं और बीजों का बैंक समाप्त हो जाता है।

पत्तों पर ट्राइक्लोपायर का छिड़काव, मिट्टी में टैबुथिउरॉन और पिक्लोरैम जैसे रसायनों का उपयोग सुबबूल को फैलने से रोकता है। अब तक जैविक नियंत्रण के कोई तरीके असरदार नहीं रहे हैं, हालाँकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में इसकी कोशिश की गई है।



कहानी पूरी करो

इस कहानी की शुरुआत या इसके बाद का हिस्सा लिखकर भेजो। चयनित कहानियाँ नवम्बर-दिसम्बर के विशेषांक में प्रकाशित होंगी।

“मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।”

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें मेरी ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई?

“तुम्हारी बन्दूक अब भी तुम्हारे पास है या उसे ठिकाने लगा चुके हो?”

मैंने अचरज से कहा, “हाँ है, लेकिन उसमें जंग लग गई होगी।”

“क्या तुम उसे लेकर कल मेरे घर आ सकते हो?”

मैंने ध्यान-से उनके चेहरे को देखा। वे वाकई गम्भीर थे।

“और हाँ, गोलियाँ भी साथ लेते आना।”

“ज़रूर, लेकिन आपको इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई? क्या आपके घर के आसपास जंगली जानवर हैं या चोर-लुटेरों का आतंक है?”

“जब तुम मेरे घर आओगे तो तुम्हें सब कुछ बता दूँगा।”...





चित्र: आर के लक्ष्मण

हाशीए में गांधी

शशि सबलोक

चित्र: कृषि साहनी

बात कोई पाँच-छह साल पुरानी है। मेरी एक दोस्त राजस्थान के एक गाँव में काम कर रही थी। वो गाँव शहर से दूर था।

उस दिन तीन अक्टूबर था। उसने दूसरी-तीसरी के बच्चों से पूछा कि कल क्यों स्कूल नहीं आए थे?

सब चिल्लाए, “दीदी छुट्टी थी।”

“क्यों?”

बच्चे चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

इस पर मेरी दोस्त बोली कि कल 2 अक्टूबर को गाँधीजी पैदा हुए थे। जानते हो गाँधी कौन थे?

इस पर कई हाथ खड़े हो गए, “दीदी, वो टकला-सा डोकरा जो 10 रुपए में होता है।”

सारी क्लास ही-ही करने लगी। दोस्त भी हँस दी।

मुझे यह बताते हुए दोस्त बोली थी, “यार, मैंने तो शुक्र मनाया कि वो गाँधी को पहचानते तो हैं।”

यह बात 2018 की है। महात्मा गाँधी की मृत्यु के कोई 70 साल बाद की। आजाद भारत का एक नागरिक खुश है कि आजादी के 71 साल बाद भी बच्चे उन्हें पहचान पा रहे हैं। उन्हें, जिन्होंने देश को आजाद कराने में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं भी खुश हो गई कि चलो अच्छा ही हुआ जो 1969 में गाँधी की फोटो को नोट पर छापने का निर्णय लिया गया। नहीं तो शायद छठी-सातवीं की किताब के पन्नों में गाँधी दबे रहते जहाँ तक जाने कितने ही बच्चे पहुँच पाते हैं। इसी के साथ एक डर भी लगा कि इंडिया तो लगातार डिजिटल होता जा रहा है। नोटों का चलन इसी तरह कम होता रहा तो आनेवाली पीढ़ी गाँधी को कहाँ देख पाएगी। इस सवाल ने मुझे उकसाया कि मैं अपने आसपास गाँधी को ढूँढ़ूँ तो वो मुझे मिले:

- स्वच्छ भारत के स्लोगन में।
- शहरी सड़कों के नाम में। (पर वो भी महात्मा गाँधी की बजाय एमजी रोड के नाम से ज़्यादा जानी जाती मिलें।)
- कुछ चौराहों की मूर्तियों में या कुछ भवनों के नामों में।
- स्कूलों में ‘सदा सच बोलो’ या ‘गांधी के जन्तर’ के साथ लगी उनकी तस्वीर में।
- कहीं-कहीं गाँधी के तीन बन्दरों में जो इशारों में गाँधी की बात दोहराते हैं कि ‘बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत कहो।’

पहचानने के अलावा आज गाँधी लोगों को कितना याद हैं यह जानने के लिए मैंने सोशल मीडिया की पोस्ट खँगालीं। अखबार,

पत्रिकाएँ देखीं। कुछ बड़े-बच्चों से बात भी की। और जो दो-तीन बातें मुझे सबसे अहम लगीं, बस उन्हीं का ज़िक्र यहाँ करना चाहूँगी—

1. गाँधीजी का जन्तर

मैं तुम्हें एक जन्तर देता हूँ। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू पा सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

- महात्मा गाँधी

अधिकांश बड़े-बच्चों को यह बात बहुत अच्छी लगी। पर अपने सन्देह की स्थिति में यह जन्तर याद न आया। किसी को इसकी ज़रूरत भी नहीं महसूस हुई। उनका मानना था कि — एक कहीं गई बात के लिहाज़ से यह बहुत अच्छा ख्याल है। पर हमारी प्रैक्टिकल समस्याएँ इससे हल होती नहीं हैं। और फिर हमारे जीवन में कितने मौके आते हैं जब हम किसी गरीब या कमज़ोर के पास जाएँ! चले भी जाएँ तो हमें उनके लाभ के बारे में इससे ज़्यादा कभी पता नहीं चलता कि पैसा उनकी हर समस्या

की जड़ है। हमारे उठाए कदम उनके लिए कितने उपयोगी रहेंगे इसका हमें आइडिया कम होता है। एक बच्ची बोली कि जब-जब मैं नया कपड़ा या जूते लेती हूँ तो सोचती हूँ पुराने वाले को किसी गरीब को दे दूँगी। इससे उसे लाभ पहुँचेगा और मेरा भी काम बन जाएगा।

इन बातों को सुनकर ख्याल आया कि गाँधी ने अपनी ज़िन्दगी के कितने साल एक धोती और चादर में गुज़ार दिए — यह देख हमें अपनी कपड़ों-जूतों से भरी अलमारियाँ असहज नहीं करतीं। वो जो कपड़ा फटने पर पैबन्द लगा पहन लेते थे। पैसिल के पूरा घिसे जाने तक उसका इस्तेमाल करते थे। वो इतने कम में गुज़ारा करते रहे कि ब्रश का एक छोटा स्ट्रोक ही उनकी पूरी तस्वीर खींचने के लिए काफी है। कभी तो कागज़ पर बना एक गोल चश्मा बाकी के सफेद हिस्से में गाँधी दिखा जाता है। उनके जन्मदिन पर हम खादी पर 30-40 प्रतिशत की आकर्षक छूट दे लोगों को और अधिक खरीदने को उकसाते हैं। और गर्व महसूस करते हैं कि हम आज भी उनके बताए रखते की अहमियत महसूस करते हैं।

हम जो ‘काम बहुत है’ के नाम पर घर, दफ्तर में अपने कुछ बँधे-बँधाए काम किए जाते हैं। और कोई आकर हमारे कपड़े धो देता है। सिल देता है। हमारा खाना बना देता है। हमारे घरों में साफ-सफाई कर देता है। सब्ज़ी-फूल-दूध-अखबार सब दे जाता है। उनमें भी गाँधी के जन्तर का कमज़ोर व्यक्ति दिख सकता है। ज़िन्दगी उनसे मिलने के, उन्हें जानने के अलग से मौके नहीं देती है। गाँधी से हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में ही सबसे अच्छी तरह मिल सकते हैं। आश्रम में गाँधी सभी कामों में शामिल रहते थे। खाना बनाना। अपने बाल काटना। कपड़े धोना। उन्हें सिलना। टॉयलेट साफ करना। बाग-बगीचे का काम करना। फटे कपड़ों की मरम्मत करना। लोगों का इलाज करना। चरखा कातना। बकरियों का ख्याल रखना। लिखना-पढ़ना

तो होता ही था। प्रार्थना में सबके साथ शामिल होना। राजनीति के बड़े-छोटे मसलों पर नेताओं से राय-मशविरा करना। अपने आसपास सबसे बराबरी का व्यवहार करना। ये हमें असहज करता है। इसलिए उनकी बातें हमें अच्छी ज़रूर लगती हैं। पर प्रैक्टिकल नहीं।

2. गाँधी के प्रयोग

गाँधी के बारे में आज जो हमें इतना पता है वो इसलिए भी कि उन्होंने अपनी आत्मकथा में वो सब लिखा है। चोरी करना, झूठ बोलना, चोरी-छिपे मांस खाना, स्कूल में कम नम्बर पाना। उनके डर। उनकी कमज़ोरियाँ, उनके प्रायश्चित सब उन्हीं से पता हैं। यह सच है कि झूठ बोल पाना सिर्फ इन्सान को नसीब हो पाया है। गाँधी भी इन्सान थे। उन्हें भी यह सहूलियत हासिल थी। पर उन्होंने सच का मुश्किल रास्ता अपनाया। अपने विरुद्ध बोलने के हथियार अपने विरोधियों के हाथों में खुद थमाए। वे कुछ भी ऐसी नसीहत देने से बचे जिस पर वो अमल न कर सकें। कहते हैं एक बार उनसे एक औरत ने कहा कि आप मेरे बच्चे से कहें कि गुड़ खाना ठीक नहीं है। पर उन्होंने नहीं कहा। कई दिनों बाद पूछने पर बोले, “पहले मैं तो गुड़ खाना छोड़ूँ तभी तो इसकी सिफारिश कर पाऊँगा” यह एक छोटी-सी पर बहुत बड़ी बात है। शायद इसीलिए अल्बर्ट आइंस्टीन ने यहाँ तक कह दिया कि आने वाले समय में लोगों को यकीन ही नहीं होगा कि कभी ऐसा कोई व्यक्ति धरती पर आया भी होगा।

गाँधी की मृत्यु के चार साल बाद 1952 से दो अक्टूबर को गाँधी जयन्ती मनाई जा रही है। इस दिन अखबारों में कुछ जगह उनके नाम पर दर्ज होती है। अक्सर एक तस्वीर होती है जिसमें दुबले-पतले गाँधी चरखा चला रहे होते हैं। यह

तस्वीर एक कहानी है। एक अहिंसक आन्दोलन की जिसकी पैरवी वो जिन्दगी भर करते रहे। उस वक्त भारत में कपड़ा उद्योग उठान पर था। अँग्रेज़ों की ओँख में यह खटकता था। उन्हें अपने देश का बना कपड़ा इस देश में खपाना मुश्किल हो रहा था। उन्होंने हथकरघा वालों पर चोट पहुँचानी शुरू की। गाँधी ने इसका तोड़ ढूँढ़ा। उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन शुरू कर दिया। वे चरखे पर सूत कातने लगे। जब जहाँ वक्त मिलता सूत कातते ताकि उससे कपड़ा तैयार हो। लोगों से कहा कि वो विदेशी कपड़ा इस्तेमाल न करें। स्वदेशी आन्दोलन का ऐसा जुनून हुआ कि लोगों ने विदेशी कपड़ों को जलाना शुरू कर दिया। मैनचेस्टर के मज़दूरों का काम छिनने का अफसोस था उन्हें। पर देश के मज़दूरों की कीमत पर कुछ नहीं। चरखा खुददारी का प्रतीक बना। तरक्की का प्रतीक बना।

अँग्रेज़ों ने नमक पर टैक्स लगा दिया और लोगों की थाली का खाना फीका होने लगा। समन्दर के पानी से नमक बनाने का काम लोग ही करते थे, पर वे उसका इस्तेमाल नहीं कर सकते थे। गाँधी खुद बिना नमक का खाना खाते थे, पर नमक की कीमत से वाकिफ थे। वो अहमदाबाद से चल पड़े 78 लोगों के साथ। 25 दिन में 241 मील पैदल चले। शहर-शहर, गाँव-गाँव में बात फैली। लोग उनके साथ चल पड़े। खबर बनी। उनके बिना कुछ बोले अँग्रेज़ों में खलबली मची। वो तेज़-तेज़ लाठी टेकते हुए मज़बूती से चलते रहे और समुद्र किनारे पहुँचकर एक चुटकी नमक उठा लिया। उन्हें जेल हुई। इस बात ने लोगों को इतना सम्बल दिया कि वो जगह-जगह पर खुद नमक बनाने लगे। नतीजा यह हुआ कि एक साल के भीतर सरकार को नमक

से टैक्स हटाना पड़ा। इतिहासकार सुधीर चन्द्र जब गांधी को 'एक असम्भव सम्भावना' कहते हैं तो जैसे आपके मन की बात कह रहे होते हैं। कौन इस बात को सोच भी सकता है कि दो सौ साल आपके देश पर राज करने वाले अँग्रेज़ों से आप इस तरह लोहा लेंगे।

खैर, बात अब आज की करते हैं। साल 2024 का दो अक्टूबर आने को है। रेडियो, टीवी, अखबारों, सोशल मीडिया में फिर सैलाब आने को हैं। मोबाइल में स्क्रॉल करते हुए आपको गांधी के रोज़मर्मा के

कितने ही किस्से मिलेंगे। टीवी पर कहीं मुन्नाभाई एम्बीबीएस और रिचर्ड एटनबरो की फिल्म गांधी भी दिख सकती है। कितने ही युवा-बच्चे गांधी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाने रे...' को बड़ी खूबसूरती से गाते मिलेंगे। पाकिस्तान के शफकत अमानत अली ने भी इसे गाया है। इन्हें सुनना, गुनगुनाना। और हो सके तो गांधी की सत्य के साथ प्रयोग वाली किताब पढ़ना शुरू कर देना। यह दिन 'एक छुट्टी' से बहुत ज्यादा है।



संस्कृत में एक काव्य है जो इस तरह लिखा गया है कि उसे रामायण की कथा के रूप में पढ़ा जा सकता है। साथ ही उसे बंगाल के राजा रामपाल की कहानी के रूप में भी पढ़ा जा सकता है। इसमें एक ही श्लोक के दो अर्थ हैं – एक अर्थ में रामचन्द्र जी की कथा और दूसरे अर्थ में रामपाल की कथा। हम सब जानते हैं कि रामचन्द्र जी की कहानी में रावण सीता का हरण कर लेता है और राम उसे छुड़ाने के लिए सुग्रीव और हनुमान की सहायता से रावण से लड़ते हैं और उसे मार डालते हैं। रामपाल की पत्नी का किसी ने हरण नहीं किया। मगर कवि सीता शब्द के दो अर्थों का उपयोग करके कहानी में एक ट्रिवस्ट लाते हैं।

सीता का एक और अर्थ होता है जमीन या धरती। तो होता यह है कि कुछ विद्रोही लोग रामपाल के राज्य की जमीन पर अपना अधिकार कर लेते हैं और उसे वहाँ से भगा देते हैं। तो राजा रामपाल की कहानी यह है कि वह किस तरह से इन विद्रोहियों को मारकर राज्य (सीता) वापस लेता है। ये विद्रोही कौन थे? ये कैवर्त थे, जो समाज के सबसे निचले दर्जे के लोग थे, जो नदियों में नाव चलाते थे और मछली पकड़कर अपना जीवन चलाते थे। कहीं-कहीं वे थोड़ी खेती भी करते थे। इन्हीं लोगों के एक सफल विद्रोह की कहानी रामचरितम् नाम के काव्य में रामचन्द्र जी की कहानी के साथ-साथ दर्ज है। इसके लेखक हैं, संध्याकार नन्दी, जो पाल वंश के राजाओं के दरबारी कवि थे।

यह बात है आज से लगभग 2000 साल पहले की। तब बंगाल, बिहार आदि पर पाल वंश का शासन था। उनके काल में बंगाल में खेती-बाड़ी फैली, गाँव और शहर बसे। जो लोग पहले शिकार करके या मछली पकड़कर जीवनयापन करते थे उनमें से कुछ अब खेतों में काम करने लगे। कभी किसानों के रूप में और कभी मज़दूरों के रूप में।

इस दौरान गाँव के लोगों में से कुछ अमीर बनने लगे। राजाओं के अधिकारी नियमित कर वसूल करने लगे। उनके अलावा सामन्त (अधीन राजा) भी होते थे। राजा और सामन्त मन्दिरों, मठों व ब्राह्मणों को जमीन और गाँव दान में देते थे। उनकी भी संख्या बढ़ती गई। कुल मिलाकर समाज में टकराव बढ़ रहे थे और आम लोगों का शोषण बढ़ रहा था। इसी बीच पाल साम्राज्य के कई सामन्तों ने मिलकर राजा के खिलाफ विद्रोह कर दिया। एक युद्ध हुआ जिसमें पाल राजा मारा गया। भीमा देखकर कैवर्त समाज के एक मुखिया ने लोगों की मदद से राज्य के एक बड़े हिस्से पर अपना शासन स्थापित कर दिया। पहले दिव्योक नाम का मुखिया शासक बना और कुछ समय बाद उसके भतीजे भीम ने शासन सँभाला।

विरोधी पक्ष के होने के बावजूद कवि नन्दी ने भीम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने बताया है कि किस तरह उसके शासन में चारों ओर खुशहाली बढ़ी और लोग सन्तुष्ट थे। वह यह भी कहते हैं कि भीम के राज्य में मन्दिरों व मठों व पण्डितों को जो जमीन दान में दी गई थी, वह वापस ले ली गई। मगर उसके अधिकारी हमेशा लोगों की सेवा में लगे रहते थे। कवि नन्दी कहते हैं कि भीम हमेशा नेकी के पथ पर चला। उसने कभी लोभ नहीं किया और उसके धार्मिक आचरण से चारों दिशाओं के अन्त तक उजाला फैल गया। (यहाँ नन्दी रामायण के सन्दर्भ में समुद्र के गुण बताते हैं, जो कभी अपनी सीमा नहीं लाँघता है आदि।)

कुल मिलाकर समाज के निचले तबके के शासक के आने से कोई अनर्थ नहीं हुआ, बल्कि चारों ओर खुशहाली फैली। मगर



पीढ़ियों से राज करने वाले राजाओं व सामन्तों को यह कैसे भाता। पुराने राजा के छोटे भाई रामपाल ने सारे सामन्तों से सम्पर्क किया। उन्हें खूब धन दिया और पद और ज़मीन का लालच दिया और उन्हें अपनी तरफ कर लिया। फिर उसने उनकी सहायता से एक सेना जुटाई और भीम पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में दोनों सेनाएँ बराबर थीं। मगर किसी संयोगवश भीम रामपाल के जाल में फँस गया और पकड़ा गया। लेकिन अभी भी उसकी इतनी कुब्बत थी कि उससे बहुत ही आदरपूर्वक व्यवहार किया गया, भले ही उसे बन्दी बनाकर रखा गया था।

इस बीच भीम कैद से भाग निकला और उसके साथियों ने एक और सेना जुटाई। मगर इस बार सेना में आम लोग भर्ती हुए, किसान,

मछुआरे, जानवर चराने वाले आदि। नन्दी कहते हैं कि ये वे लोग थे जो राजाओं के करों से परेशान थे। वे जोश से तो लड़े मगर उनके पास तीर-कमान के अलावा हथियार, या घोड़े या रथ नहीं थे। वे भैंसों पर सवार होकर तीर चला रहे थे। वे बुरे तरीके से हारे। कल्ले आम मचा, खून की नदियाँ बहीं और एक बार फिर भीम को बन्दी बनाया गया। लेकिन अबकी बार उससे अलग व्यवहार किया गया। उसे जल्लाद के मंच पर भेजा गया। वहाँ पहले उसकी आँखों के सामने उसके परिवार के सदस्यों को मारा गया और अन्त में उसे खुद सैकड़ों तीरों से भेदकर मारा गया। इस तरह खत्म हुआ कैवर्ती का विद्रोह।

यह भारतीय इतिहास में समाज के निचले तबकों के लोगों का शायद सबसे पुराना विद्रोह था जिसका विवरण हमें मिलता है।

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे

अदनान कफ़िल दरवेश

वो जमा होंगे एक दिन और
खेलेंगे एक साथ मिलकर

वो साफ-सुथरी दीवारों पर
पैंसिल की नोक रगड़ेंगे
वो कुत्तों से बतियाएँगे
और बकरियों से
और हरे टिड्डों से
और चींटियों से भी...

वो दौड़ेंगे बेतहाशा
हवा और धूप की मुसलसल निगरानी में
और धरती धीरे-धीरे
और फैलती चली जाएगी
उनके पैरों के पास...

देखना!

वो तुम्हारे टैंकों में बालू भर देंगे एक दिन
और तुम्हारी बन्दूकों को
मिट्टी में गहरा दबा देंगे
वो सड़कों पर गड्ढे खोदेंगे और पानी भर देंगे
और पानियों में छपा-छप लोटेंगे...



चित्र: सुरगी, सात साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच, बेंगलूरु, कर्नाटका

चित्र: नवजोत कौर, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड



वो प्यार करेंगे एक दिन उन सबसे
जिनसे तुमने उन्हें नफरत करना सिखाया है

वो तुम्हारी दीवारों में
छेद कर देंगे एक दिन
और आर-पार देखने की कोशिश करेंगे
वो सहसा चीखेंगे!

और कहेंगे:

“देखो! उस पार भी मौसम तो हमारे यहाँ जैसा ही है”
वो हवा और धूप को अपने गालों के गिर्द
महसूस करना चाहेंगे
और तुम उस दिन उन्हें नहीं रोक पाओगे!

एक दिन तुम्हारे महफूज़ घरों से बच्चे बाहर निकल आएँगे
और पेड़ों पे घोंसले बनाएँगे
उन्हें गिलहरियाँ काफी पसन्द हैं
वो उनके साथ ही बड़ा होना चाहेंगे...

तुम देखोगे जब वो हर चीज उलट-पुलट देंगे
उसे और सुन्दर बनाने के लिए...

एक दिन मेरी दुनिया के तमाम बच्चे
चीटियों, कीटों
नदियों, पहाड़ों, समुद्रों
और तमाम वनस्पतियों के साथ मिलकर धावा बोलेंगे
और तुम्हारी बनाई हर एक चीज़ को
खिलौना बना देंगे...

तीसरी ओँख



वसुन्धरा बहुगुणा
चित्रः अमृता

बहुत पुरानी बात है। किसी गाँव में एक सीधा-सादा जुलाहा अपनी पत्नी के संग एक छोटी-सी झोपड़ी में रहता था। उनके पास खेत का एक छोटा टुकड़ा था। उसमें वो साग-सब्जियाँ उगा लिया करते थे। जुलाहा अब कभी-कभार ही बुनता था। खेत के टुकड़े में उगी साग-सब्जी बेचकर दो वक्त की रुखी-सूखी रोटी लायक कमा लेता था। उसकी पत्नी भी थोड़ा बहुत बुनाई, सिलाई, कढ़ाई कर लेती थी। कुछ इस तरह उनकी ज़िन्दगी का कारवाँ चल रहा था। उनके नाम झल्लू और झल्ली थे।

सर्दियाँ आईं। एक रोज़ जुलाहे ने अपनी पत्नी से कहा, “अरे! सुनती हो, आज क्यों ना हम मालपुआ खाएँ?”

पत्नी झट-से बोली, “खयाल अच्छा है और घर में थोड़ा आठा और धी-शक्कर भी है। तुम खेत पर काम कर आओ। मैं तब तक मालपुए बना देती हूँ।”

उधर जुलाहा खेत पर पहुँचा और इधर उसकी पत्नी ने चूल्हे पर कढ़ाही चढ़ाई। धी में आठा गूँथा। और देखते ही देखते पहला पुआ लोहे की काली कढ़ाही के अन्दर डाल दिया। छन्छवान्, छन्छवान् की आवाज़ कढ़ाही से निकली। फिर धी में तैरकर और चाशनी में डूबकर पहला मालपुआ तैयार हुआ। इसी तरह दूसरा, फिर तीसरा और एक-एक करके बन गए पूरे तेरह मालपुए।

ये जो जुलाहे और उसकी पत्नी का छोटा-सा खेत था, वो था ठीक उनकी झोपड़ी के पीछे। और जिधर चूल्हा था, ठीक उस ही तरफ उस रोज़ जुलाहा काम



कर रहा था। तो ये मालपुए के पकने की मीठी आवाज़ जुलाहे के कानों में साफ-साफ पड़ रही थी। और क्योंकि उसने पत्नी से मालपुए खाने की फरमाइश की थी, ज़ाहिर-सी बात है उसके कान रसोई पर टिके थे। उसने पूरे तेरह बार छन्न-छवान्, छवान्-छन्न सुना था। साथ ही यह मन बना लिया था कि आज तो पूरे तेरह के तेरह मालपुए खा जाऊँगा।

उधर झोपड़ी में पत्नी ने सोचा, “धी इतना कीमती, आटा इतना महँगा, लकड़ी इतनी दुर्भार। एक-एक मालपुआ आज खाएँगे और बाकी ग्यारह सम्भाल देंगे। चलो, उनको मैं दो भी दे देंगी। फिर भी अपने पास हफ्ते भर के लिए दस मालपुए बच जाएँगे।” ये सोचकर उसने तीन मालपुए टोकरी में रखे और बाकी के दस मर्तबान में सम्भाल दिए।

जुलाहा खेत से काम करके लौटा। फिर हाथ-मुँह धो तेरह मालपुए खाने की आस में फर्श पर बैठ गया। पर ये क्या, पत्नी ने तो सिर्फ दो ही परोसे। वो झाट-से बोल उठा, “बनाए तेरह, दिए दो। ये कैसा है फेरा।”

जुलाहे की पत्नी मुँह बाये उसे ताकने लगी। पति को बाकी दस मालपुए परोसते हुए उसने सोचा, “अरे! बाबा रे बाबा, मेरा पति तो सब कुछ बूझ लेता है। उसको वो भी मालूम चल जाता है जो उसने देखा ही नहीं, जो उसको बताया ही नहीं। लगता है वो अन्तर्यामी है। ज़रूर उसकी तीसरी आँख है।”

फिर क्या था। झल्ली के पेट में यह बात न पची। अगली सुबह ही उसने आसपड़ोस में अपनी सखी-सहेलियों को यह बात बता डाली। बात आग की तरह चार गाँव फैल गई कि झल्लू जुलाहे की तीसरी आँख है। वो अन्तर्यामी है। जो न देखा हो, वो भी बूझ लेता है।

अब एक बार हुआ यूँ कि दूर किसी गाँव में एक किसान की कुदाल खो गई। उसने सब जगह ढूँढ़ा, पर कुदाल न मिली। किसी ने सुझाया कि भाई झल्लू जुलाहे से परामर्श करो। तो वो दौड़ा-दौड़ा सीधा आ पहुँचा झल्लू और झल्ली की झोपड़ी में।

“झल्लू जी कृपा करें। कल सुबह मेरी कुदाल न जाने किधर चली गई। ढूँढ़-ढूँढ़कर थक चुका हूँ। कुदाल है कि मिलने का नाम ही नहीं लेती!” इससे पहले कि झल्लू कुछ बोल पाता, झल्ली झाट-से बोल उठी, “हाँ, हाँ कर देंगे। कर देंगे। यह सब बूझ सकते हैं। आप धीर धरें।”

झल्लू ने झल्ली को एक कोने में ले जाकर पूछा, “अरी! ये क्या कहती हो। मुझे क्या मालूम उसकी कुदाल किधर गई।”

झल्ली बोली, “यही तो आप जैसे अन्तर्यामी का बड़प्पन है। आपको सब मालूम चल जाता है। कुदाल क्या चीज़ है?”

झल्लू की तरफ से किसान की मदद की पुकार को झल्ली ने स्वीकार लिया। “आप न घबराएँ। झल्लू जुलाहे के दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटेगा”, वो बोली।

“अच्छा ठीक है, तुम कल सुबह सात बजे वापस आना। तुम्हें तुम्हारा जवाब मिल जाएगा”, झल्लू ने झल्ली के प्रस्ताव पर कुछ सोचते हुए कहा। किसान हाथ जोड़ वहाँ से चला गया। झल्लू ने झल्ली से कहा, “अब जब तुमने मुझको इस आफत में डाल ही दिया है, तो यही सही। लगे हाथ ज़रा दस रोटी बना दो। मैं खोज पर निकलता हूँ। देर रात ही लौटूँगा।”

रोटी अँगोछे में बाँध झल्लू जुलाहा किसान के गाँव चल दिया। रास्ते में कई खेत-

**जुलाहा खेत से
काम करके
लौटा। फिर
हाथ-मुँह धो
तेरह मालपुए
खाने की आस
में फर्श पर बैठ
गया। पर ये
क्या, पत्नी ने तो
सिर्फ दो ही
परोसे। वो
झाट-से बोल
उठा, “बनाए
तेरह, दिए दो।
ये कैसा है
फेरा।”**

अब तो झल्लू
के किसे पूरे
राज्य में कैल
चुके थे। प्रक
दिन रानी
साहिना का
बेशकीमती
हीरों का ठार
गायब हो
गया। पूरे
राज्य में
हायतौना मच
गई। किसी
मंत्री ने राजा
को सुन्नाया,
“महाराज,
अलाने गाँव में
फलाने नाम

का प्रक
जुलाहा रहता
है। सुना है
उसकी तीसरी
आँख है। वह
बिन देखे ही
सब कुछ बूझ
लेता है।”

खलिहान पड़े। जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ता गया, झल्लू का दिल दहलता गया। अरे! मुझको क्या मालूम वो कम्बखत कुदाल किधर होगी। ना जाने कहाँ फँसा दिया झल्ली ने।

किसान के गाँव से कुछ दूर ही एक बड़ा खेत था। झल्लू ने वहीं से अपनी तफतीश शुरू की। झल्लू ने पूरा खेत छान लिया, मगर कुदाल न मिली। हताश हो वो आगे बढ़ा। उसने कई छोटे-बड़े खेत छान डाले। करते-करते रात के एक बज गए। परेशान झल्लू एक आखिरी खेत में तेजी-से एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी नाली दोनों हाथों से टटोल रहा था। आखिरी नाली में उसके हाथों में कुछ पैनी चीज़ चुभी।

“हो न हो, ये उसी किसान की कुदाल है”, उसने सोचा। और इस तरह वाकई झल्लू ने किसान की कुदाल ढूँढ़ निकाली। उसने कुदाल को खेत के पास ही नीम के पेड़ की माँद में रख दिया। फिर वो ताबड़तोड़ अपने गाँव की ओर दौड़ा। सुबह के यही कोई चार बजने वाले थे। वो दबे पाँव झोपड़ी में दाखिल हुआ और गहरी नींद सो गया।

उसकी नींद झल्ली के झकझोड़ने से खुली। आँखें खुलीं तो झल्लू क्या देखता है कि वही किसान हाथ बाँधे उसके सामने खड़ा है। “क्या आपने अपनी तीसरी आँख से कुछ देखा?” किसान ने रुआँसा हो पूछा। झल्लू ने रौबीली आवाज़ में कहा, “हाँ, अपने गाँव की सीमा पर उस बड़े खेत में जाना। वहाँ तुम्हें एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ दिखेगा। उसी की माँद में तुम्हारी कुदाल पड़ी है।”

किसान सरपट दौड़ा। खेत पर जाकर क्या देखता है कि सचमुच उस बड़े-से नीम के

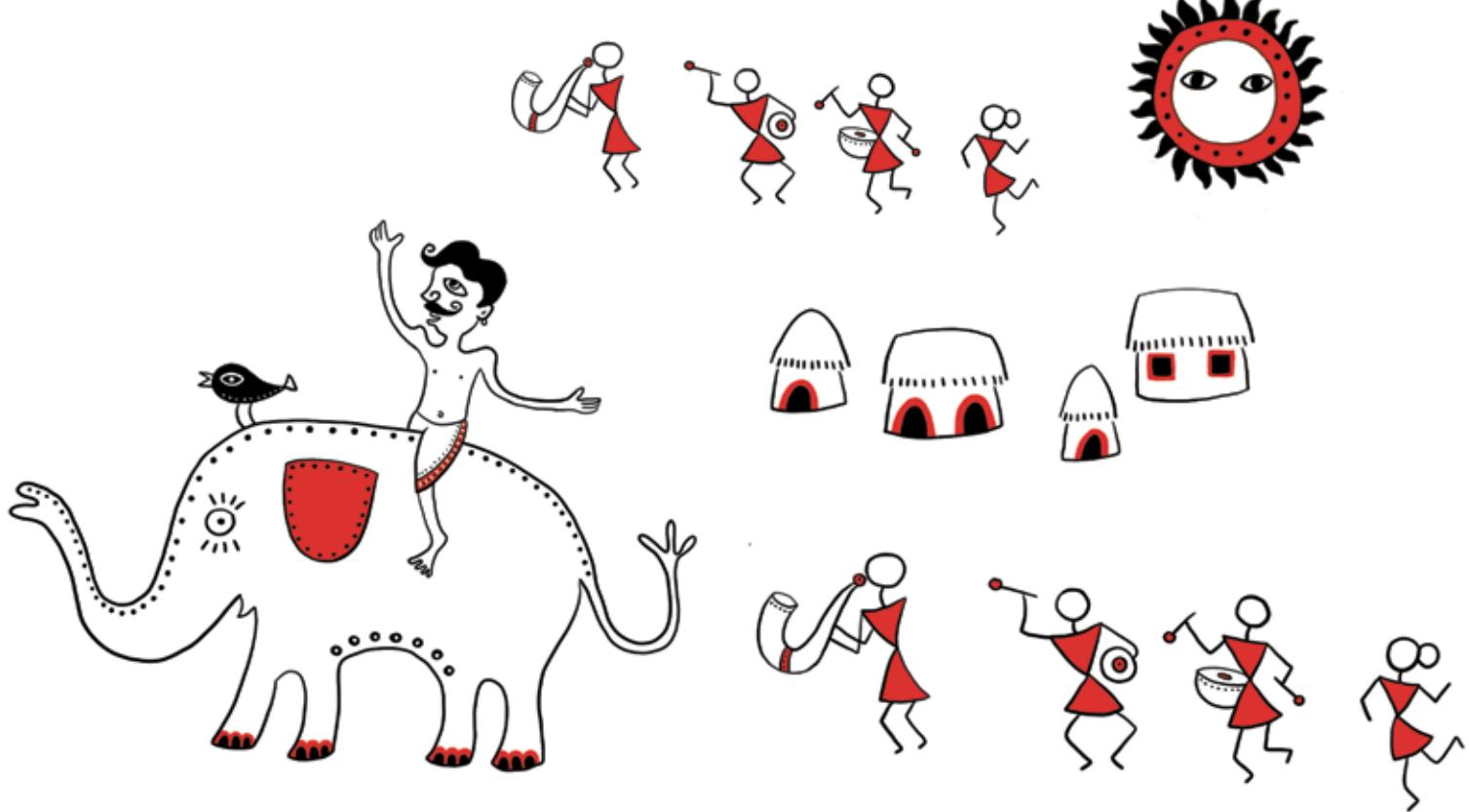
पेड़ की माँद में उसकी कुदाल रखी है। वह खुशी-से उछल पड़ा और झल्लू जुलाहे का गुणगान करने लगा। इस वाकये से झल्लू की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

एक रोज पास के गाँव से एक मोटा महावत रोते-बिलखते झल्लू जुलाहे के पास पहुँचा। सिसकियों के बीच टूटे-फूटे शब्दों में उसने बताया कि उसका प्यारा हाथी ‘मतवाला’ कहीं खो गया है। “झल्लू आप सर्वज्ञ हैं। आप अन्तर्यामी हैं। आपको ईश्वर ने तीसरी आँख से नवाज़ा है। रहम कीजिए। मदद कीजिए।”

झल्लू भी अब उस बाघ की तरह हो गया था जिसके मुँह खून लग गया हो। किसान ने उसकी तारीफों के इतने ऊँचे और लम्बे पुल बाँध दिए थे कि वो सीना चौड़ा करके गाँव भर में फिरता। अब महावत की पुकार सुनकर उसने खुद ही फौरन उसकी मदद करने की रजामन्दी दे दी। उसको तो बस ये करिश्मा कर दिखाना था और वाहवाही लूटनी थी। किसान ने उसको साल भर का अनाज तोहफे में दे दिया था। महावत शायद कुछ और माल-ताल दे दे।

इस आस से झल्लू ने महावत को गले लगाया और कहा, “मन छोटा मत करो भाई। ऊपर वाला चाहेगा तो तुम्हें तुम्हारा हाथी मतवाला अवश्य मिल जाएगा। तुम अभी घर लौट जाओ। कल सुबह दस बजे वापस आना। हो सकता है मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ अच्छी खबर हो।”

इधर महावत उम्मीद लिए घर गया और उधर झल्लू ने झल्ली से कहा, “अरे! मेरे लिए बीस रोटी बना दो। रोटी पहले केले के पत्ते में लपेट देना, फिर अँगोछे में। लम्बा सफर है, कहीं रोटियाँ खराब न हो जाएँ।”



झल्ली ने झट-से बीस रोटियाँ और केले के फूल की पाँच पकौड़ियाँ बना डालीं। फिर उनको केले के पत्ते में लपेटकर और अँगोछे में बाँधकर झल्लू को थमा दिया।

दिन भर झल्लू गाँव-गाँव भटकता रहा, पर हाथी हाथ न लगा। शाम को एक नदी के किनारे खाना खाने का निश्चय कर वो वहीं ठहर गया। उसने रोटी नीचे रखी और हाथ-मुँह धोने लगा। हाथ-मुँह धोकर मुड़ा ही था कि क्या देखता है, एक बदबूज्ञ भीमकाय हाथी केले के पत्ते समेत उसकी सभी रोटियाँ और पकौड़ियाँ चट कर गया।

एक पल को तो झल्लू जुलाहा झल्ला उठा, मगर दूसरे ही पल उसने सोचा, “हो न हो ये महावत का ही हाथी है। और अगर न भी हो तो मैं कह दूँगा कि यही उसका मतवाला है!”

उसने हाथी को पुचकारा और उसे पास ही बरगद के पेड़ पर बाँध दिया। उसके बाद झल्लू जुलाहा सीधा घर लौटकर चैन की नींद सो गया। सुबह ठीक दस बजे महावत झल्लू की झोपड़ी के बाहर

आ खड़ा हुआ। “क्या आपने अपनी तीसरी आँख से कुछ देखा?” महावत ने आशावादी स्वर में पूछा।

झल्लू बोला, “मैंने देखा कि यहाँ से पूरब की ओर दो कोस दूर एक काली नदी है। उसके तट पर एक बड़े-से बरगद के पेड़ पर तुम्हारा मतवाला एक रस्सी से बँधा हुआ है।” महावत दौड़कर नदी के तट पर पहुँचा और वहाँ सचमुच अपने प्यारे हाथी मतवाला को पा खुश हो उठा! फिर क्या था, वह हर दिन झल्लू जुलाहे की तारीफ़ करता न थकता। उसने झल्लू जुलाहे को एक सेर कपास भी भेंट की।

अब तो झल्लू के किस्से पूरे राज्य में फैल चुके थे। एक दिन रानी साहिबा का बेशकीमती हीरों का हार गायब हो गया। पूरे राज्य में हायतौबा मच गई। किसी मंत्री ने राजा को सुझाया, “महाराज, अलाने गाँव में फलाने नाम का एक जुलाहा रहता है। सुना है उसकी तीसरी आँख है। वह बिन देखे ही सब कुछ बूझ लेता है।”

पेज 30 पर जारी...

इस कहानी का विलेन कौन?

इश्तेयाक अहमद

D momaya, CC BY-SA 3.0 <<https://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>>, via Wikimedia Commons

हम देर रात कोयम्बटूर से बस में ऊटी होते हुए नीलगिरी के बोक्कापुरम पहुँचे थे। पहले दिल्ली से ट्रेन में 35-40 घण्टे और फिर बस में 7-8 घण्टे के सफर ने थका दिया था। बेखबर सोए थे कि अहले-सुबह चिड़ियों की चहचहाहट ने जगा दिया। यह जगह मुदुमलै जंगलों के बीचोंबीच थी।

थोड़ी दूरी पर किसी चंचल नदी की किलकारियाँ चिड़ियों के कलरव और मन्द-मन्द चलती हवा से सरसराते घास-पत्तों की आवाज के साथ मिलकर अद्भुत संगीत रच रही थीं। चारों तरफ हरे-भरे विशाल दरख्त और नीचे दरख्तों से भी हरी झाड़ियाँ और घास। उन पर पड़े सूखे पत्ते और सूखी नन्हीं टहनियाँ पेरों के नीचे चरमरा रही थीं। साफ-शफाफ वाया और सिर के ऊपर चमकीला नीला आसमान। नींद कहाँ छूमन्तर हुई पता ही न चला।

नदी की आवाज़ पकड़कर बढ़ चले। उधर जंगल ज्यादा घना था। पेरों के नीचे अब घास कम और सड़ रही पत्तियाँ और टहनियाँ ज्यादा थीं। उनसे बने ह्यूमस से छूटती खुशबू नथुनों में भर रही थी। जरा-सी देर में एक शोख-लापरवाह नदी नज़र आई। उसके किनारे एक तरफ समतल जगह पर नमक

का ढेर था। इतना तो तय था कि नमक इस नदी के पानी से नहीं बना था क्योंकि मीठे पानी में नमक की मात्रा उतनी नहीं होती जिससे नमी वाले इलाके में नमक बन सके।

फिर इत्ता सारा नमक यहाँ कैसे आया? और उससे भी बढ़कर, कि कौन लाया और क्यों लाया? इन सवालों के साथ वापस अपने डेरे की तरफ लौटना पड़ा क्योंकि घड़ी 7 बजा रही थी। और 9 बजे से साथी-मिलन की गतिविधियाँ शुरू होने वाली थीं। साथी-मिलन में देश के 12 राज्यों में गाँवों-जंगलों में लोगों के हक-अधिकार और जंगल, पानी-पहाड़ बचाने वाले साथी अपने यहाँ चल रहे कामों को और चुनौतियों को साझा करते हैं। इस तरह वे एक-दूसरे से सीखते-जानते हैं। इस बार का मिलन एम सेल्वराज अन्ना ने आयोजित किया था। बेहद शालीन और थोड़ा बोलने और हमेशा कुछ सोचते रहने वाले सेल्वराज वक्त के पाबन्द हैं और लेट-लतीफी उन्हें सख्त नापसन्द है।

हम लपककर बढ़ रहे थे। डर भी था कि कहीं रस्ता न भटक जाएँ। पर पैने 8 बजे तक हम

जगह पर पहुँच गए। सेल्वराज की मोटे शीशों के पीछे से झाँकती चमकीली आँखों ने हमारा स्वागत किया। हमने उनसे नदी किनारे नमक की बात पूछी तो बोले, “लेटर (बाद में)।” अन्ना हिन्दी बमुशिकल बोल पाते हैं। अँग्रेज़ी बोलते हैं, पर उसे समझना भी आसान नहीं होता।

रात गए अन्ना जब ज़रा फुर्सत में दिखे तो हमने फिर से पूछा। मुलायम आवाज़ में बोले, “अकेले रिवर नहीं जाना। दिस एलिफेंट जोन... फॉरेस्ट में सिंगल जाना वेरी रिस्की, वेरी अनसेफ! इस सीज़न में एलिफेंट का बेबी होना। मदर एलिफेंट प्राइवेसी माँगता। नया लोग को टॉलरेट नहीं करना!”

“पर सॉल्ट अन्ना...? व्हाई सॉल्ट नियर रिवर?”

“लोकल कम्युनिटी का लोग रखता, मदर एलिफेंट के लिए। फीमेल एलिफेंट प्रेग्नेंसी का टाइम सॉल्ट लाइक करता। हियर पीपल रिस्पेक्ट एलिफेंट, वरशिप नेचर। दे वरशिप ट्रीज, रिवर, रेनफॉल। इधर का सबसे फेमस देवी, मारिअम्मन का टेम्पल वेरी फेमस। मारिअम्मन, गॉडेस ऑफ रेन। ट्राइबल लोग फॉरेस्ट का अन्दर सॉल्ट रखता। एलिफेंट को जंगल में सॉल्ट मिलता तो वो विलिज को अटैक नहीं करता।”

“एलिफेंट विलिज पर अटैक क्यों करते हैं? आर एलिफेंट वाइलन्ट हियर?”

“एलिफेंट नॉट वाइलन्ट! देयर इज़ अ लॉन्ग स्टोरी! अभी लेट नाइट हो गया। अभी सोना!”





Timothy A. Gonsalves. CC BY-SA 4.0, <https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=126718269>

“अन्ना, नो सोना! स्टोरी सुनना! वरना नो स्लीप!”

“ओके! पैशन्स होना, ओके? लॉन्ग स्टोरी नो!”

उसके बाद उन्होंने जो कुछ सुनाया वह हमारे लिए बिल्कुल नया था। संक्षेप में तुम्हें बताते हैं।

ऊटी-मसिनागुड़ी रोड के पास से एक नदी निकलती है, मोयार नदी। बेहद खूबसूरत, तीस्ता नदी-सी चंचल है मोयार! वह पहाड़ी रास्ते पर अल्हड़ता से चलती-बहती मुदुमलै के जंगलों में पहुँचती है। मुदुमलै वन्य जीवों से भरा एक जाना-माना जंगल है। यह हाथियों के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। एलिफेंट कॉरिडोर में भटकते हुए हाथी हर साल बड़ी संख्या में एक खास मौसम में वहाँ प्रजनन के लिए आते हैं। स्वाभाविक है कि ऐसे में गाभिन (प्रेगनेंट) हथनियाँ भी बड़ी संख्या में वहाँ आती हैं। मोयार नदी उस समय जंगली हाथियों के लिए पानी का सबसे बढ़िया स्रोत होती है।

तो हुआ कुछ यूँ। 1960 के दशक में कैमरे की रील (फिल्म) बनाने वाली एक कम्पनी ने अपनी एक फैक्ट्री ऊटी के उस हिस्से में डाली जिसके पास से हमारी प्यारी मोयार नदी गुज़रती है। तुम्हें शायद पता हो कि पहले कैमरों में रील लगती थी। कहा गया था कि उस फैक्ट्री से लोगों को रोज़गार मिलेगा और इलाके की अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी।

तो खैर, उस फैक्ट्री में पानी की ज़रूरत मोयार नदी से पूरी की जाती। और फैक्ट्री से निकला प्रदूषित और ज़हरीला पानी (जिसमें तरह-तरह के रसायन मिले होते) नदी में बहा दिया जाता। और हमारी प्यारी मोयार नदी उस ज़हरीले पानी को मुदुमलै के जंगलों में पहुँचाने लगी। हाथियों को नदी के पानी में आए इस बदलाव की वजह तो नहीं समझ आई। पर उन्हें उस पानी से नुकसान ज़रूर होने लगा। समझदार हाथियों ने उस ज़हरीले पानी का इस्तेमाल बन्द कर दिया। पर उन्हें पानी तो चाहिए था, और वह भी ढेर सारा। वे साफ पानी की तलाश में भटकने लगे। हैरान-परेशान वे इन्सानों की बस्तियों में पहुँच गए। वहाँ उन्हें पानी तो मिला ही, साथ ही खेतों में लगे तरह-

तरह के अनाज, फल और सब्जियाँ भी मिलीं। फिर क्या था, हाथियों की तो चाँदी हो गई। वे जमकर खाते, भर पेट पानी पीते और वापस जंगलों में चले जाते।

पर किसान परेशान! हाथियों के झुण्ड बार-बार उनके खेतों को तहस-नहस करने आ जाते। और खेत ही नहीं, कई बार वे खलिहानों या भण्डार में रखे अनाज पर भी हाथ साफ करने लगे। इन्सान उनका सामना नहीं कर पाते। कुछ वीर बाँकुरों ने हाथियों को रोकने की कोशिश की तो गजराज के गुस्से के शिकार हो गए। किसानों की भुखमरी की नौबत आ गई। हाथियों को देवता के रूप में पूजने वाले उनके प्रकोप से बचने के उपाय ढूँढने लगे।

जब पानी सर से ऊपर चला गया तो किसानों ने एक उपाय निकाला। पेड़ में लगे कटहल में जतन से छेद बनाया और उसके अन्दर बम फिट कर दिए और छेद को अच्छी तरह ढँक दिया। हाथी हर रोज़ की तरह मदमाते हुए भोजन-पानी की तलाश में गाँव में पहुँचे। पर जैसे ही एक हाथी ने उस बम वाले कटहल पर मुँह मारा, धड़ाम की आवाज़ हुई और विशालकाय हाथी के भारी-भरकम मस्तक के चीथड़े उड़ गए।

बाकी के हाथी हक्के-बक्के हो गए और मारे गए हाथी के ईर्द-गिर्द जमा हो गए। कभी दुख और बौखलाहट में चिंधाड़ते, तो कभी उसे अपनी सूँड़ों के सहारे खड़ा करने की कोशिश करते। वे शायद यकीन नहीं कर पा रहे थे कि उनका वह हट्टा-कट्टा हाथी अचानक इस तरह मर कैसे सकता है!

हाथी अपने साथी की मौत का गम इन्सानों से कहीं बेहतर ढंग से मनाते हैं। पूरा झुण्ड देर तक लाश के पास रहा। वे लाश को इस तरह सहलाते रहे, मानो आखिरी बिदाई दे रहे हों। फिर सबने समवेत स्वर में चिंधाड़ना शुरू किया और ज़रा देर बाद भारी कदमों से वापस मुदुमलै के जंगलों में चले गए।

उसके बाद हाथियों के गाँव में घुसने, उनके किसानों पर हमला करने, धड़ाम की आवाज़, हाथियों की रुदन भरी चिंधाड़ यह सब आम बात हो गई। गाँव के किसानों पर हाथियों की हत्या के आरोप लगते रहे। वे जेल जाते रहे। या फिर घूस देकर बचते या जेल से बाहर आते रहे।

फोटो रील की फैक्ट्री चलती रही। कम्पनी का मुनाफा बढ़ता गया। किसी ने फैक्ट्री लगाने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगाया। उनके ऊपर कोई केस नहीं किया गया। बाद में डिजिटल कैमरे का दौर आया और फोटो रील की ज़रूरत न रही तो कम्पनी ने उस फैक्ट्री को बन्द कर दिया। अब वह फैक्ट्री बन्द पड़ी है। उससे किसी को कोई रोज़गार नहीं मिलता। पर उसने इन्सानों और जंगली हाथियों को हमेशा के लिए एक-दूसरे का दुश्मन बना दिया। अक्सर खबरें आती हैं कि कहीं हाथी ने किसी किसान को मार डाला या कहीं किसानों ने हाथी को।

मारिअम्मन देवी का मन्दिर अब भी है वहाँ। पहले से भी भव्य हो गया है। पर वर्षा की देवी अब नाराज़ हैं क्योंकि वहाँ अब बारिश में कमी दर्ज की जा रही है। पहले वहाँ साल के नौ महीनों में बारिश हुआ करती थी। अब उसका कोई पैटर्न नहीं रह गया है। कई वेटलैंड यानी पानी वाले घास के मैदान और जंगल सूखने लगे हैं। भारत में रहने वाले प्राचीनतम तोड़ा आदिवासी समुदाय की आजीविका और केवल वहीं पाए जानेवाले एक विशेष प्रजाति के भैंसे का जीवन कष्टकर होते जा रहे हैं। 1988 के बाद से जंगल में आग लगने की घटनाएँ भी आम हो गई हैं।

मेरी वह सुबह मोयार नदी के साथ गुज़री थी और रात उस अबला नदी के अनन्त दुखों के साथ। उस रात के बाद से वह नदी अब मेरी शिराओं में बहती है, अपने तमाम दुखों के साथ!





क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

जानवरों के मल इतने अलग-अलग आकार व आकृतियों के क्यों होते हैं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

कुछ ऐसी जगहें होती हैं जहाँ हम सुरक्षित महसूस करते हैं, जहाँ हमें किसी भी किस्म के शोषण का सामना नहीं करना पड़ता। कोई हमें परेशान नहीं करता – ना हमारे रंग-रूप को लेकर, ना कपड़ों की स्टाइल को लेकर और ना ही हमारे विचारों को लेकर। तुम्हरे लिए ऐसी जगह कौन-सी है, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चक्रमंक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

सुशीला सोनपाकर, सातवीं, 'बी', माध्यमिक शाला, परसा, अम्बिकापुर, सरगुजा,
छत्तीसगढ़

जानवरों के मल को देखकर मुझे अच्छा नहीं लगता। खाना खाते समय भी मेरे दिमाग में मल रहता है। इसलिए खाना खाते समय मुझे खाने का भी मन नहीं करता और उलटी लगने लगती है। ऐसे सवाल ना ही पूछें तो अच्छा है।

डॉली सिन्हा, नौवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ उत्तराखण्ड

जानवरों का मल अलग-अलग इसलिए होता है क्योंकि वो अलग-अलग वैराइटी का खाना खाते हैं। इस कारण उच्च वैराइटी, निम्न वैराइटी और निम्न से भी नीचे की वैराइटी का खाना खाने वाले जन्तुओं का मल अलग-अलग होता है। लेकिन कभी-कभी यह भी सोचती हूँ कि शायद ये भी अपनी आन्तरिक कौशलता को अन्य जानवरों को दिखाने के लिए करते होंगे या फिर अपने मल को पहचानने के लिए करते होंगे। ताकि कोई और उनके मल पर हक न जमा ले।

अमृता, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

क्योंकि जानवर जो खाते हैं, उनके पेट का आकार जितना होता है उतना छोटा खाना होकर उस आकार में मल निकलता है।

साक्षी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूर्णी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

अवनि धीमान, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

जानवरों की आवाज़ अलग-अलग होती है। उनके पैर-पैर अलग-अलग होते हैं। उनकी पूँछ भी अलग-अलग होती है। इसलिए उनके मल भी अलग-अलग होते हैं।

अक्षिता वर्मा, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

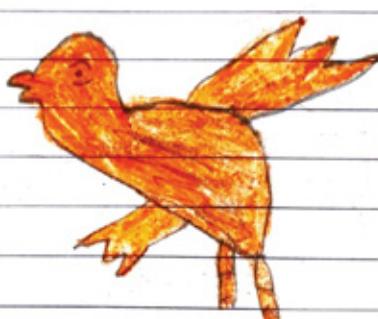
सभी जानवर एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। उनके आहार, आकार एवं आवास के कारण उनके मल अलग-अलग होते हैं। जैसे खरगोश और बकरी के मल गोल-गोल होते हैं और कुत्ते के मल अण्डाकार या लम्बे होते हैं।

Sadhna 3

जानवरों के मल अलग-अलग तरह होने के निम्न कारण हैं:

1. सभी जानवरों का अपना अलग-अलग पाचन तंत्र होता है। इस वजह से उनका मल या तो सख्त या पतला होता है।
2. वह अलग-अलग तरह का खाना खाते हैं। जैसे कि कुछ शाकाहारी होते हैं और कुछ मांसाहारी और कुछ सर्वाहारी। इस वजह से उनके मल का रंग और आकार भिन्न-भिन्न हो जाता है।
3. जानवर अपने शरीर के आकार के हिसाब से कम या ज्यादा खाते हैं। इन वजह से उनके मल की मात्रा की अलग-अलग होती है।
4. कुछ जानवर एक जगह खड़े होकर, कुछ चलते हुए और पक्षी उड़ते हुए भी मल करते हैं। इससे उनके मल की आकृति और आकार अलग-अलग हो जाता है।

प्र२ने जानवरों के मल, जिनी मूलग-मूलग
जाकृति हो और जाकारों के बिंदु द्वारा
भर बकरी, गाठ, भैंस, घोड़े जूनवर, प्रपञ्च त्रीप
जपुना, रूपाना छह पापन करते ही इनका मल मनो
होता है।



चित्र: साधना, तीसरी, अङ्गीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

अखिल राना, आठवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल,
मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

अंकुश रंजक, छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला,
परसा, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

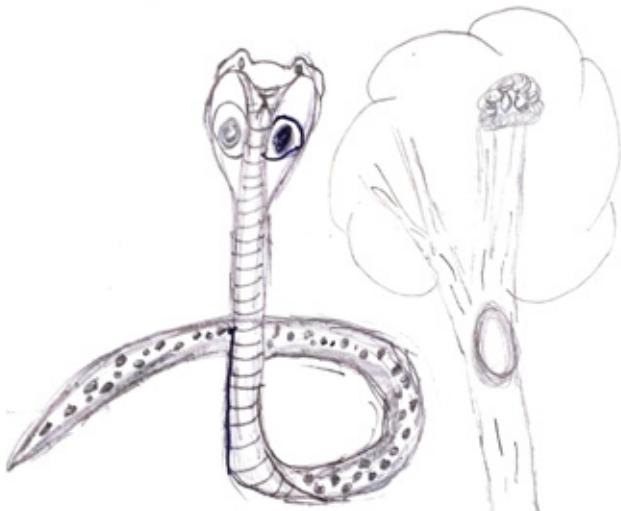
जानवरों के मल अलग-अलग आकृतियों के होते हैं क्योंकि उनकी आन्तरिक संरचनाएँ अलग-अलग होती हैं, जैसे आँतें, मलाशय आदि। किसी जानवर की आँतें तथा मलाशय बड़े होते हैं और किसी के छोटे। उनका खान-पान भी अलग होता है। इसे दो जानवरों के उदाहरण लेकर समझते हैं। जैसे कि भैंस ज्यादा धास खाती है और बकरी पत्ते खाती है। धास ज्यादा रसीली होती है। इसलिए भैंस का गोबर थोड़ा गीला-गीला होता है। और पत्तों में रस कम होता है इसलिए बकरी का गोबर चने की तरह सूखा होता है।

भैंस के मलाशय में गोबर एक साथ होता है, जिसका कोई शेप नहीं होता। जब वह नीचे गिरता है तब वह गोल जैसे शेप का होता है। बकरी के मलाशय में मल चने के शेप का होता है। जब वह नीचे गिरता है तब भी वह इसी शेप का रहता है क्योंकि वह हल्का होता है और थोड़ा सूखा-सूखा भी रहता है।

कुछ जानवर छोटे होते हैं जैसे बकरी, चूहा, छिपकली आदि। जो जानवर पानी कम पीते हैं उनका मल ठोस तथा छोटा होता है। जो जानवर ज्यादा पानी पीते हैं उनका मल तरल अवस्था में होता है। बड़े जानवर ज्यादा खाते हैं इसलिए उनका मल ज्यादा तथा बड़ा होता है। कुछ जानवरों का मल बहुत गन्दा स्मैल करता है, जैसे बैल, गाय, चूहा आदि।

चित्रः शौर्य, पाँचवीं, अङ्गीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

Name - Shourya Class - 5th Roll - 27
स्वारे जानवरों का मल इस्लीख उल्लग-
उल्लग होता है क्योंकि वो सब जानवर
उल्लग - उल्लग छाना बातें हैं।



सुहानी दास, सातवीं, माध्यमिक शाला,
परसा, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

हर जानवर की किस्म
अलग-अलग होती है।
किसी जानवर की आँख
छोटी होती है तो किसी के
दाँत बड़े-छोटे होते हैं। जैसे
कि चूहे का मल छिपकली
के मल के समान होता है।
ये जानवर के शरीर के
मल निकालने के अंग पर
भी निर्भर करता है।

गौरी, आठवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल,
मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

क्योंकि सबके पेट में
अलग-अलग मशीनें हैं।
और अलग-अलग मशीनों
का काम भी अलग-अलग
ही होगा। उनके पेट में
अलग आकार का मल
देने वाली मशीन होगी।
इसलिए अलग-अलग
आकार देती है

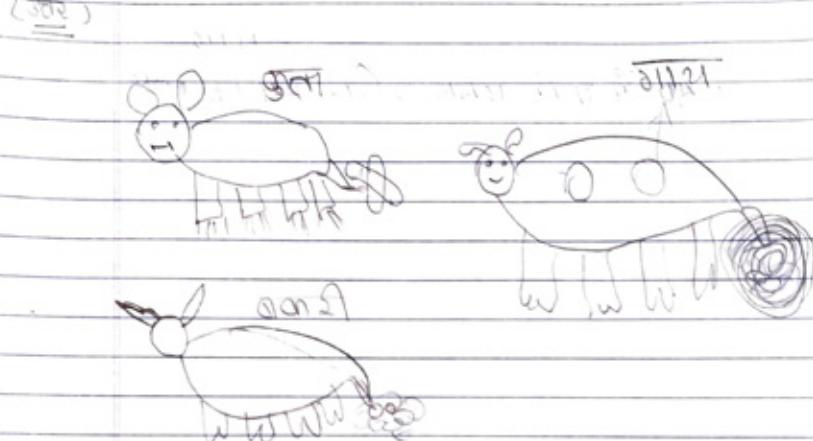
तेजस्वी साहू, नौवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरे अनुसार ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जानवरों के अंग भी अलग-अलग होते हैं। और
उनके मलद्वारा के आकार भी अलग-अलग होते होंगे। सामान्य-सी बात है कि मलद्वारा से
निकलते वक्त जानवरों के मल का साइज़ भी बदल जाता होगा। और ऐसा सभी जानवरों
के साथ होता होगा।

नाम- कोसल

Date: 15.9.24
Page No. -

(उल) जानवरों के मल इतने अलग-अलग आकार
पर्यावरणीके वर्षी होते हैं।
जिन उल्कर लिखकर सिनक्या से जानता है सजते हैं।

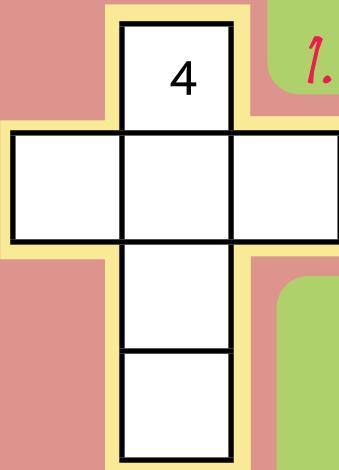


जानवरों के मल इसलिए अलग होते हैं।
जो कि जानवर इससे अलग होते हैं और
जानवरों का तो पेट की अलग होता
है और जो जानवर होते हैं वहोंमें
इन अलग होते हैं और जो जानवरों
को मल अमृतसारा मल है वो जहाँत
अलग होता है।

चित्र: कोमल, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

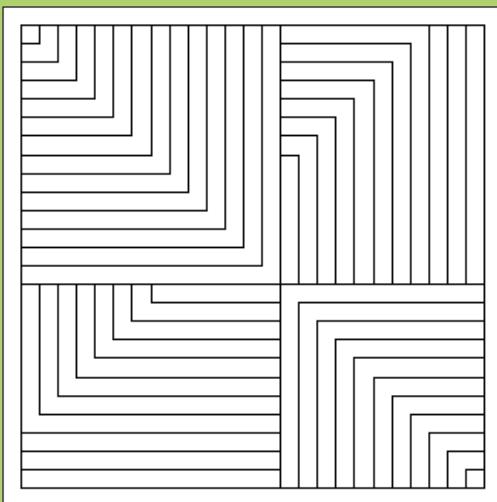
देवराज, तीसरी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

क्योंकि सभी जानवर एक जैसे नहीं होते।



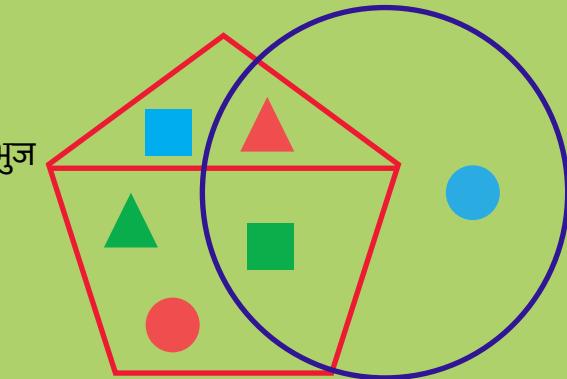
1.

खाली खानों में 2, 3, 5, 6, 7 को इस तरह लिखो कि आड़ी व खड़ी दोनों लाइनों में लिखी संख्याओं का जोड़ 15 हो।



3.

कौन-सी आकृति त्रिभुज, वृत्त और पंचभुज तीनों के अन्दर है?



4.



इस चित्र में की एक आकृति छुपी है। क्या तुम उसे ढूँढ सकते हो?

5.

9 साल पहले मैं 9 साल की थी। 9 साल बाद मेरी उम्र क्या होगी?

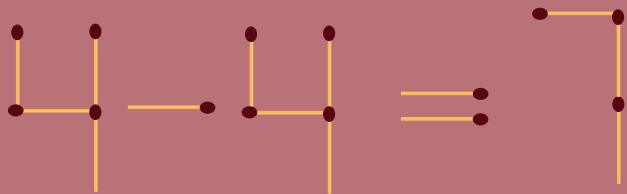
6. आबिद ने एक बक्से में 5 सफेद और 5 काले मोँजे रखे हैं। कमरे में एकदम अँधेरा है। वह जल्दबाज़ी में बिना देखे मोँजे निकालता है। उसे कम से कम कितने मोँजे निकालने चाहिए ताकि उसे समान रंग के मोँजों की एक जोड़ी मिल जाएँ?

7. दी गई ग्रिड में कई वाहनों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

पा	भा	टी	ब	आँ	टो	रि	क्षा	हे
स	म्बु	लै	स	ट्र	क्रे	जि	सी	ली
वा	सा	द्वी	रे	वै	न	स्कू	मै	कॉ
ह	इ	वा	ल	की	बा	ल	ट	ए
पै	कि	तां	गा	मा	बु	ट्रै	क्ट	र
बै	ल	गा	डी	रॉ	ल	ना	द	नी
रो	बो	ले	द	के	डो	व	म	ला
ह	वा	ई	ज	हा	ज़	ट्र	क	म
पी	जा	ना	मा	का	र	दी	ल	हा

8.

सिर्फ एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को ठीक करना है। कैसे करेगे?



9.

	4		
6	2		
9	?	1	
19	10	7	6

प्रश्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

10. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग वाहन आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा वाहन आएगा?



आथा पच्ची

फटाफट बताओ

पेरिस पैरालम्पिक 2024 में मोना अग्रवाल ने किस खेल में कांस्य पदक जीता है?

1. बैडमिंटन 2. तीरन्दाजी
3. शूटिंग 4. भालाफेंक

(पृष्ठ 8)

भारत का पहले मानव अन्तरिक्ष मिशन “गगनयान” को किस वर्ष लॉन्च करने की सम्भावना है?

1. 2024 2. 2022
3. 2025 4. 2027

(पृष्ठ 1)

वह क्या है जहाँ नदी है पर पानी नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं, सड़क है पर गाड़ियाँ नहीं?

(पृष्ठ 6)

जादू के डण्डे को देखो
कुछ पिए न खाए
नाक दबा दो तुरन्त रौशनी
चारों ओर फैलाए

(पृष्ठ 5)

बिन पानी रूप ना ले
पानी से गल जाए
आग लगाकर फूँक दो
तो पक्की हो जाए

(पृष्ठ 4)

जवाब पेज 42 पर

पेज 19 से जारी...

महाराज ने गरजती हुई आवाज में आदेश दिया, “फौरन उसे हमारे दरबार में पेश किया जाए!” राजा के समस्त संत्री-मंत्री दौड़-भागकर झल्लू जुलाहे के गाँव पहुँचे। सुबह के ग्यारह बज रहे थे। झल्लू झोपड़ी में आराम फरमा रहा था। अचानक राजा के सैनिक और मंत्री को अपनी छोटी-सी झोपड़ी में देख वो चौंक उठा। झल्ली भी डर से काँपने लगी।



राजा का मुख्यमंत्री बोला, “क्या तुम ही झल्लू जुलाहे हो?”

“ज-ज-ज-ज-जी, जी मैं ही झल्लू जुलाहा हूँ। मैंने कुछ नहीं किया”, झल्लू हाथ जोड़कर बोला।

“हाँ, हाँ जानते हैं। हमारी बात गौर-से सुनो। राजमहल में शायद चोरी हुई है। रानी साहिबा का

बेशकीमती हीरों का हार गायब हो गया है। हमने तुम्हारी ख्याति सुनी है। महाराज के आदेश से हम तुम्हें ले जाने आए हैं। तुम्हें फौरन हमारे साथ राजमहल चलना होगा!”

झल्लू जुलाहे ने झल्ली की ओर देखा और सोचा, “इस बार तो मैं पक्का पकड़ा जाऊँगा! और अगर कुछ न कर पाया तो मारा भी जाऊँगा!”

खैर, जब ओखल में सर दे ही दिया तो मूसल से क्या खाक डरता झल्लू! चल दिया दिल थामे उनके साथ और जा खड़ा हुआ राजा के समक्ष।

“हाँ, तो झल्लू जुलाहे, हमने तुम्हारी खूब तारीफ सुनी है। ज़रा अपनी तीसरी आँख खोलो और हमारी रानी साहिबा का बेशकीमती हार ढूँढ निकालो। तुम्हारे पास कल दिन तक का वक्त है। हार मिला तो तुम्हारी सात पुश्तें तर जाएँगी। लेकिन अगर तुम नाकामयाब रहे तो सीधा कारागार जाओगे।”

झल्लू जुलाहे को एक आलीशान कमरे में ठहराया गया। वो दिन भर इधर-उधर घूमता-फिरता और सोचता रहा। सबसे पूछताछ की, मगर हार की कोई खबर न मिल सकी। इधर महल के सभी कर्मचारी हैरान-परेशान घूम रहे थे कि तीसरी आँख



वाला झल्लू जुलाहा न जाने किस पर चोरी का इल्जाम मढ़ दे।

रात हो गई। महल के पकवान खा, डकार मार झल्लू अपने कमरे में पहुँचा। वो थक गया था। उसकी आँखों में नींद थी, मगर वो सोता तो कैसे! कभी नींद का झोंका आता, तो घबराकर उठ खड़ा होता। कुछ देर बाद एक लम्बी उबासी मार झल्लू जुलाहा बोला, “निन्दी ओ निन्दी बिन्दी रे बिन्दी, अभी आती है तुझको काहे की निन्दी, सुबह टूटेगी तेरी कमर और मुण्डी!” ये कहकर और एक ठण्डी आह भरके झल्लू जुलाहा करवट ले सोने की कोशिश करता है।

अब हुआ यूँ कि महल में रानी की दो खास दासियाँ थीं। एक का नाम था निन्दी और दूसरी का बिन्दी! दरअसल रानी साहिबा का हार चुराना उन दोनों की मिलीभगत थी। वो झल्लू जुलाहे के कमरे के बाहर ही खड़ी थीं। इस डर से कि कहीं झल्लू अपनी तीसरी आँख से देख लेगा कि उन्होंने ही चोरी की है और सुबह होते ही उनका नाम राजा के सामने ले लेगा, तो क्या होगा।

झल्लू जुलाहे की निन्दी-बिन्दी की तुकबन्दी सुन वो डर से थर-थर काँपने लगीं। सीधा कमरे में धुस झल्लू के पाँव पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगीं। झल्लू घबराकर उठा और अँधेरे में दो साये अपने पैर के पास देख उछल पड़ा। “क-क-क-क... कौन है, कौन है वहाँ। हठो, दूर हठो!” वो चिल्लाया।

निन्दी और बिन्दी ने कहा, “कृपा करें। हम दुखियारिन हैं। हमसे बहुत बड़ी गलती हुई है। गलती नहीं पाप हुआ है। हमने रानी साहिबा का हार चुरा लिया है। मगर अब आपको पता चल गया है और हमारी जान खतरे में है। हमें बचा लीजिए। हम दोबारा ऐसा नहीं करेंगे!”

तब जाकर झल्लू जुलाहे को सारी बात समझ में आई। उसने रौब से कहा, “ठीक है, ठीक है। पहले ये बताओ कि तुमने हार कहाँ छुपाया है?”

“रसोईघर में चूल्हे के नीचे!” निन्दी और बिन्दी बोल उठीं। “चलो मेरे साथ। तुम्हारे पास सज्जा से बचने का बस एक यही तरीका है,” झल्लू बोला। वे तीनों रसोईघर में गए और उन्होंने रानी का हार चूल्हे के नीचे से निकाल लिया। उसके बाद निन्दी और बिन्दी ने माफी माँगी और झल्लू ने उन्हें वहाँ से जाने का आदेश दिया। साथ ही ये भी कहा, “याद रहे, झल्लू जुलाहे की तीसरी आँख से कोई नहीं बचता। सुधर जाओ वरना महाराज से कहकर तुम दोनों को कालकोठरी में बन्द करवा दूँगा।”

इधर निन्दी और बिन्दी ने सुधरने की और फिर कभी ऐसा काम न करने की शपथ ली। उधर झल्लू जुलाहे ने रानी साहिबा का वो बेशकीमती हीरों का हार रसोईघर में अनाज के एक नीले मर्तबान में छुपा दिया। उसके बाद वो अपने कमरे में गया और घोड़े बेच सो गया।

सुबह होते ही झल्लू जुलाहे को राजा के सामने हाजिर किया गया। “हाँ भाई झल्लू, तो तुम्हारी तीसरी आँख ने तुम्हें क्या दिखलाया?”, राजा ने पूछा। “महाराज”, झल्लू जुलाहा अपने शब्द नाप-तौलकर बोला, “रसोईघर में अनाज का एक नीला मर्तबान है। रानी साहिबा का हार उसी मर्तबान के अन्दर है।”

राजा समेत सभी दरबारी रसोईघर की ओर भागे। पीछे-पीछे झल्लू जुलाहा भी चला। राजा ने खुद नीले मर्तबान का ढक्कन हटाकर उसमें हाथ डालकर टटोला। अरे! यह क्या, मर्तबान से तो सचमुच रानी साहिबा का हार निकला।

फिर जो हुआ वो तो बस किस्सों-कहानियों में ही हुआ करता है। राजा ने खुश होकर झल्लू जुलाहे को एक बड़ा मकान और ढेर सारे कपड़े लते, हीरे-जवाहरात और पैसे दिए। राजा ने तो वाकई झल्लू और झल्ली की सात पुश्तें तर दीं।

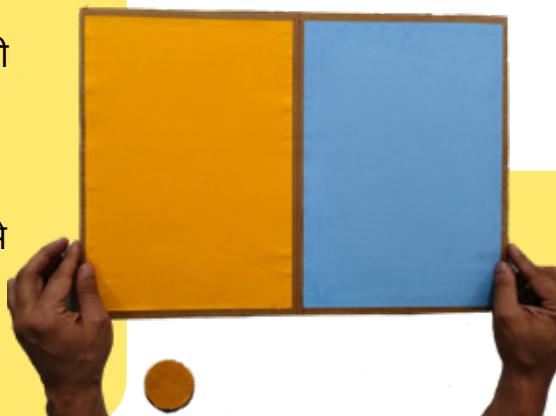
तुम्ही बनाओ



1. एक आयताकार गत्ता
लो। उसके बीचोंबीच एक
रेखा खींचकर उसे दो
बराबर भागों में बाँट लो।
दोनों भागों में अलग-अलग
रंग के कागज़ चिपका लो।

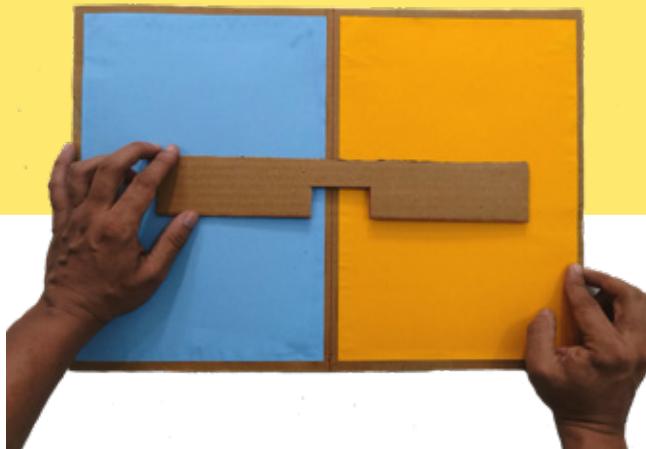
जुगाड़: बड़ा गत्ता,
पैसिल/पैन, स्केल,
अलग-अलग रंग के
कागज़, कटर/कैंची,
पेपर क्लिप या पतली
डण्डी, बड़ा रबरबैंड और
गोंद/फेविकॉल

2. खींची गई रेखा जितनी
लम्बी 3 पट्टियाँ और गत्ते
की लम्बाई के बराबर 2
पट्टियाँ काट लो। सभी
पट्टियों की चौड़ाई कम से
कम 2 इंच रखना।



3. गत्ते से 2 सेंटीमीटर व्यास के 6 गोले काट लो। जो दो रंग के
कागज़ तुमने गत्ते में चिपकाए थे, उनमें से एक कागज़ को 3
गोलों पर और दूसरे को बाकी के 3 गोलों पर चिपका लो। ये
बन गए हमारे स्ट्राइकर।

4. इनमें से 1 गोले के केन्द्र को पट्टी के बीचोंबीच रखकर उस पर एक आयत बनाकर काट लो।





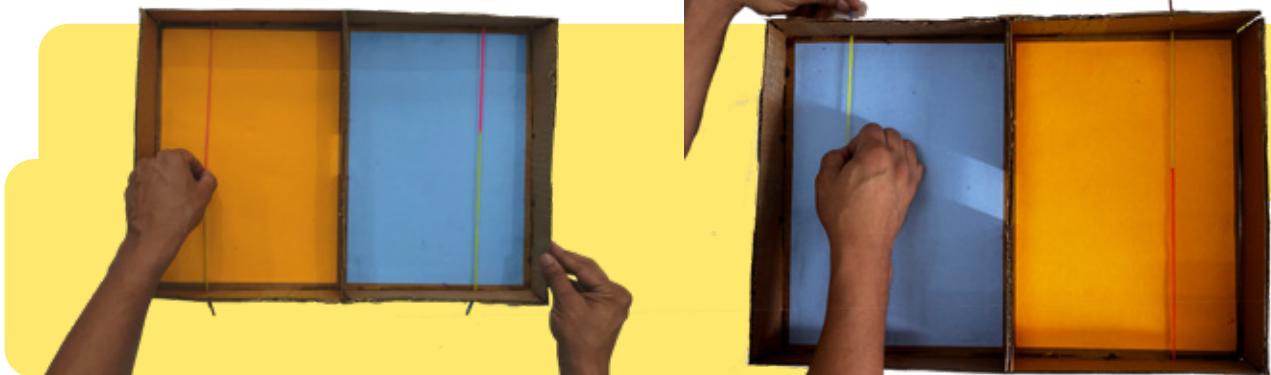
5. इस पट्टी को गते के बीचवाली रेखा पर और बाकी की पट्टियों को चारों तरफ चिपका लो।



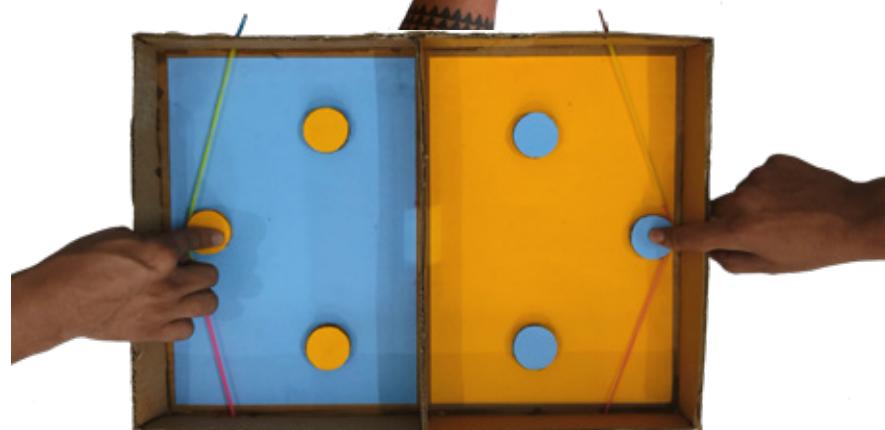
6. अब बॉक्स के चारों कोनों से थोड़ी दूरी पर एक-एक छेद करो।



7. फिर रबरबैंड के एक सिरे को पेपर क्लिप (या पैसिल) में फँसाकर उसके दूसरे सिरे को छेद से अन्दर डालो और दूसरी ओर के छेद से बाहर निकालकर पेपर क्लिप में फँसा दो। ध्यान रखना कि रबरबैंड बहुत कड़ा या फैला न हो।

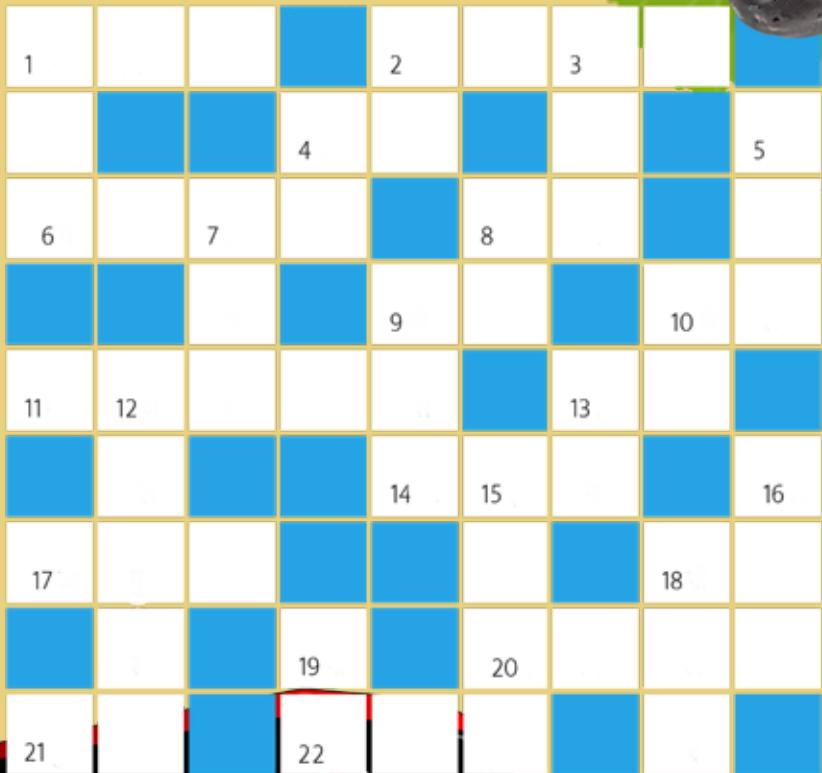


8. बस हो गया तुम्हारा गेम तैयार। अपने दोस्तों के साथ इसे खेलो।



चित्र पहेली

बाँ से दाँ
ऊपर से नीचे



4

14



19



20



13



13

10



1



1

8



सुडोकू 80

					6	4
2		3	7		1	9
	7				8	3
7			5	9	3	1
2		5	8	1		6
				2		
5		2	1	8		6
		8	9	2	5	1
1	9	5	6	7		

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? परं ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



पिताजी ने मुझे नई कलम खरीदकर दी थी। वह नीले रंग की थी। मैं कलम लेकर स्कूल गई। मैं गणित के सवाल हल कर रही थी। तभी लंच की छुट्टी हो गई। मैंने कलम को कॉपी में रख दिया और सहेलियों के साथ लंच करने चली गई। दोपहर की क्लास में जब मैंने लिखने के लिए कलम निकालनी चाही तो कलम मिली ही नहीं। मैंने पूरा बस्ता छान लिया। मगर कलम नहीं मिली।

कलम

चायरा
सातवीं, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक शाला
लोहारा, चन्दपुर, महाराष्ट्र

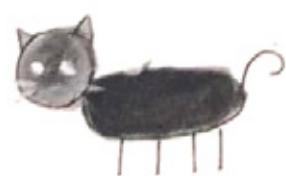


मैं बेहद दुखी हो गई। नई कलम थी। अब पिताजी की डॉट भी पड़ेगी ये सोचकर मुझे रोना आने लगा। घर जाने पर शाम को जब पिताजी लौट आए तो मेरा उत्तरा हुआ चेहरा देखकर पूछने लगे, “क्या हुआ?” मैंने सब बात बता दी। पिताजी ने मुझे डॉटा और एक थप्पड़ भी कस दिया। मैंने उस रात खाना नहीं खाया। पढ़ाई भी नहीं की।

अगले दिन मैं स्कूल में गणित की तासिका में कॉपी-किताब निकालने लगी। मैंने जैसे ही गणित की कॉपी खोली कलम झट-से नीचे गिरी। कलम देखकर मेरे मुँह से निकला, “हे भगवान! मैंने फालतू में थप्पड़ खाया।”

हमोई गली के बच्चे काली बिल्ली से बहुत डैंस हैं। पर मुझे काली बिल्ली से बिलकुल उड़ नहीं लगता। मुझे तो बिल्लियाँ प्यासी लगती हैं।

चित्र: प्रियल, आठवीं, रावतभाटा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान



मेरी एक दोस्त ऐसी भी है
 अगर मैं उदास रहूँ तो मुझे मनाए
 अगर मैं रोती रहूँ तो मुझे हँसाए
 मेरी दोस्त ऐसी भी है
 जो मुझे खोने से डरे
 और मेरी हर समस्या का हल बने
 मेरी दोस्त ऐसी भी है
 जो मुझे कभी नाराज़ ना होने दे
 और मैं उसे कभी नाराज़ ना होने दूँ
 मालूम नहीं हम एक-दूसरे
 को कभी खो जाएँगे
 अभी हम पाँच-सात घण्टे बिताएँगे
 पर वक्त ऐसा भी आएगा
 तब हम 5 मिनट भी
 वक्त नहीं निकाल पाएँगे...

मेरी एक दोस्त ऐसी भी है....

रिया चांभारे

नौवीं

आनन्द निकेतन स्कूल
सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र



चित्र: दिव्या मेहरा, बारहवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

हिरण की चाल

माही यादव
चौथी
शासकीय एकीकृत कन्या
माध्यमिक विद्यालय
चोली, खरगोन, मध्य प्रदेश

एक जंगल में हिरण रहता था। वह बहुत बुद्धिमान था। एक दिन वह खाने की तलाश में गया और घास खाने लगा। तभी एक शेर आया। उसे देखते ही हिरण भागा। शेर उसके पीछे-पीछे भागा। हिरण भागते-भागते एक नदी के पास पहुँचा। आगे जाने का रास्ता नहीं था। शेर ने कहा, “मैं तुझे खा जाऊँगा।” हिरण बोला, “मैं एक सवाल पूछता हूँ। यदि तुमने मेरे सवाल का सही जवाब दिया तो तुम मुझे खा लेना। अगर गलत उत्तर दिया तो तुम मुझे छोड़ देना।” फिर हिरण ने पूछा, “एक हाथी था। वह आसमान में उड़ रहा था। बताओ हाथी के कितने पंख होंगे?” शेर बोला, “दो होंगे।” “हाथी तो उड़ता ही नहीं है।” यह कहकर हिरण भाग गया और शेर बहुत पछताया।



चित्र: सबा खान, चौथी, दीपालया सीनियर सैकेंडरी स्कूल, गसबेठी, नूह, हरयाणा



चित्र: हिदान पंडया, नौ साल, बाल भवन सोसाइटी, वડोदरा, गुजरात

बारिश और मैं

उमर
तीसरी
सावित्रीबाई फुले
फातिमा शेख लाइब्रेरी
आरिफ नगर, भोपाल
मध्य प्रदेश

एक रात हम सब सो रहे थे। हमें पता नहीं था कि उस रात पानी गिरेगा। रात में अचानक बारिश होने लगी। मेरे ऊपर पानी की एक बूँद गिरी और मेरी नींद खुल गई। मैंने देखा कि हमारा बिस्तर पूरा भीग गया था। और अम्मी-पापा घर के ऊपर जो पनी डली हुई थी, उसे ठीक कर रहे थे।

उस समय मुझे बहुत गुरस्सा आ रहा था। और मैं सोच रहा था कि कब हमारे अच्छे, पक्के घर बनेंगे। कब हमारी बस्ती में रोड बनेगा और कब हमें कीचड़ से छुटकारा मिलेगा।



एक छोटी-सी मछली

हरनूर कौर
पाँचवीं, अलवर पब्लिक स्कूल
अलवर, राजस्थान

मैं हूँ एक छोटी-सी मछली
मैं तैरती हूँ तेज़-तेज़
और कभी धीमे-धीमे
जब आ जाती है शार्क
मैं डर जाती हूँ
खेल नहीं पाती हूँ
समुद्र की गहराई में उतर जाती हूँ
और दूर भाग जाती हूँ

मम्मा का बचपन और मैं

हितांश जोशी
पहली, केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

आज जब मम्मा अपने बचपन की बात बता रही थीं तब मेरा मन कर रहा था कि काश मैं भी मम्मा के बचपन में जा पाता तो हम मज़े करते। अगर मेरे पास टाइम मशीन होती तो मैं अपनी मम्मी से मिलता। फिर मैं उनसे कहता कि आप मेरी मम्मा हो। मुझे लगता है कि ये सुनकर शायद वो शरमा जार्ती।

फिर मैं नानाजी से मिलता और उनकी हरकतें देखता। फिर मैं अपने पापा को ढूँढता और देखता कि पापा बचपन में क्या शैतानी करते थे। फिर मैं पापा को डाँटता। उसके बाद मैं गाँधी जी से मिलता। पर इसके लिए मुझे टाइम मशीन से टाइम को और भी पीछे करना पड़ेगा। फिर मैं आयरनमैन की लेसर बीम से गाँधी जी की टीम को जिताता।

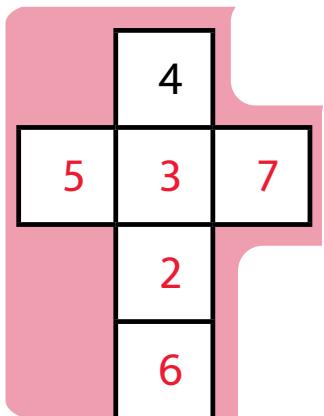


चित्रः शिखा लोवंशी, नौरीं, गुफ्तगू़ लारी प्रोजेक्ट, चकमक क्लब, ग्राम नूरगंज, रायसेन, मध्य प्रदेश

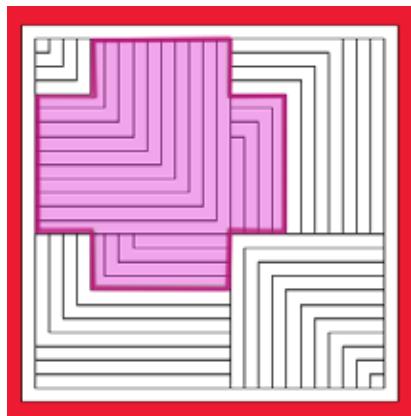
$$2. \quad 2 + 5 = 3 + 4$$

३. लाल रंग का त्रिभुज।

1.



4.



5.

9 साल पहले मैं 9 साल की थी, यानी
कि अभी मैं $9 + 9 = 18$ साल की हुई।
इसलिए 9 साल बाद मेरी उम्र होगी,
 $18 + 9 = 27$ साल।

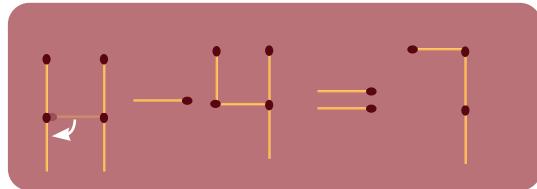
6

3 मोजे, क्योंकि 3 में से कोई भी 2 मोजे पक्के तौर पर एक रंग के होंगे।

7.



8



9

3, क्योंकि ऊपर के खानों में लिखी संख्याएँ नीचे लिखी संख्याओं का अन्तर है।

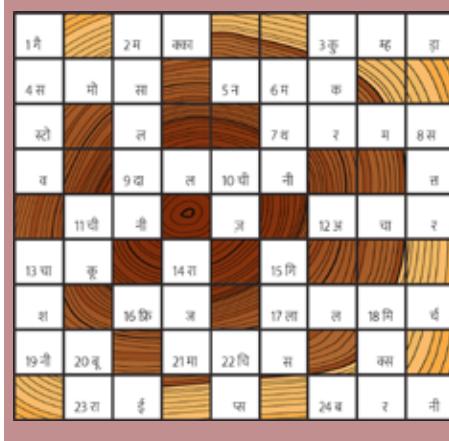
$19 - 10 = 9, 10 - 7 = 3, 7 - 6 = 1 \dots$ इत्यादि।

	4	3, क्योंकि ऊपर के खाना लिखी संख्याओं का अन्तर $19 - 10 = 9, 10 - 7 = 3,$	
6	2		
9	3	1	
19	10	7	6

9.

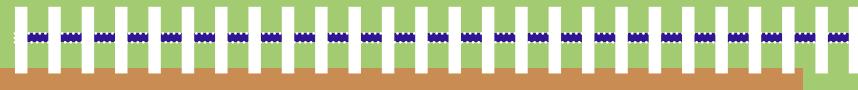


इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



9	8	3	2	1	5	6	4	7
4	2	6	3	7	8	1	9	5
1	5	7	4	9	6	2	8	3
8	7	4	6	5	9	3	1	2
2	9	5	8	3	1	7	6	4
6	3	1	7	2	4	8	5	9
5	4	2	1	8	3	9	7	6
7	6	8	9	4	2	5	3	1
3	1	9	5	6	7	4	2	8

तुम भी जानो



एक बहुत ही अनोखी बात हुई है। मुम्बई शहर में पहली बार कुछ ऐसा दिखा है जिसकी कल्पना भी नहीं की गई थी। आर्कटिक टर्न नाम का एक पक्षी हर साल एक ध्रुव से दूसरे तक और फिर वापस प्रवास करता है। कुछ हफ्तों पहले तक 90 से ज्यादा बार इसे मुम्बई में देखा गया है। जबकि इसके प्रवास का रास्ता भारत के आसपास भी नहीं है। इसके अलावा कुछ अन्य दुर्लभ पक्षी भी इस बारिश के मौसम में दिखे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि तूफानों के कारण ये अपने रास्तों से भटककर भारत में कुछ समय के लिए फँस गए।

ध्रुव पर पाए जाने वाले पक्षी अब मुम्बई में



बन गए हैं और इमोजी



क्या तुम्हें पता है कि फोन, कम्प्यूटर और अन्य गैजेट पर जब हम कोई इमोजी इस्तेमाल करते हैं तो उसे चुनने के लिए हमारे पास कितने विकल्प होते हैं? सैकड़ों नहीं, एक लाख से भी ज्यादा। अब बन गए हैं कुछ नए इमोजी और इनके साथ इमोजी की संख्या 1,54,998 हो गई हैं। नए बने इमोजी में से कुछ हैं खुरपा, उँगली की छाप, बिन पत्तियों वाला पेड़, मूली, हार्प, बैंगनी रंग का धब्बा और सार्क द्वीप का झण्डा। इनमें सबसे हटकर है आँखों के नीचे काले घेरों वाला चेहरा! अब देखते हैं कि इन्हें कौन-सी कम्पनी किन गैजेट में शामिल करेंगी।

शुक्र



पता है इरावदी डॉल्फिन ने मीठे
पानी और खारे पानी ढोनों में रहने
के लिए खुद को विकसित कर
लिया है।

डॉल्फिन अभ्यारण्य

काश कि मैंने खुद को
गन्धगी में रहने के लिए
विकसित किया होता।

रोहन चक्रवर्ती
अनुवाद: कविता तिवारी



प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रेक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादक: विनता विश्वनाथन